पंचम अध्याय

कथाशिल्प

पंचम अध्याय

कथाशिल्प

(क) सामाजिक जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने में कथा भाषा की जीवंतता

विविध शैलियों का प्रयोग –

यद्यपि अमरकान्त सप्रयास विविध शैलियों के प्रयोग के पक्ष में कभी नहीं रहे, फिर भी उनके लगातार संपन्न हो रहे कथा साहित्य में हमें अनेकों शैलियों के प्रयोग दिखायी पड़ते हैं। इन्हीं में से कुछ शैलियों की चर्चा हम करेंगे। अमरकान्त के कथा साहित्य को जिन शैलियों का प्रयोग दिखायी पड़ता है वे निम्नलिखित हैं।

1. कथात्मक या वर्णनात्मक शैली
2. आत्मचरितात्मक या आत्मकथात्मक शैली
3. पत्रात्मक शैली
4. दृश्य शैली
5. कथोपकथन या संवाद शैली
6. स्वप्न विश्लेषण शैली
7. विश्लेषणात्मक शैली
8. सांकेतिक शैली
9. व्यंग्यात्मक शैली
10. हास्य शैली
11. प्रतीकात्मक शैली
12. उद्धरण शैली

13. आत्मविश्लेषण युक्त भावात्मक शैली

14. चित्रात्मक शैली

15. रेखाचित्र या संस्मरणात्मक शैली

16. चेतना प्रवाह शैली

17. समन्वित शैली

18. समाचार पत्रों की कतरन या रिपोर्ताज शैली

उपर्युक्त शैलियों का संक्षेप में परिचय प्राप्त करते हुए हम अमरकान्त के कथासाहित्य में उनके प्रयोग की सविस्तर चर्चा करेंगे।

1) कथात्मक या वर्णनात्मक शैली –

विभिन्न साहित्यिक शैलियों में यह शैली बहु प्रचलित है। ''इसमें कथाकार असंप'क्त भाव से कथा कहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्णन की प्रधानता रहती है। इसमें कथाकार की प्रवत्ति, रूचि व योग्यता को लक्षित किया जा सकता है, क्योंकि इसमें बिना किसी बंधन के खुलकर लिखने की स्वच्छंदता होती है।''[147]

अमरकान्त की कहानी – इंटरव्यू, जिंदगी और जोंक, मूस, बस्ती, उनका जाना और आना, एक बाढ़ कथा, और जाँच और बच्चे जैसी कहानियों में इस कथात्मक शैली का उपयोग किया गया है। साथ ही 'सूखा पत्ता','ग्रामसेविका' 'आकाश पक्षी', 'इन्हीं हथियारों से' और 'बिदा की रात' नामक उपन्यासों में भी इस शैली के उदाहरण मिल जाते हैं। 'सूखा पत्ता' उपन्यास का यह अंश देखिए, ''सर्दी अच्छी पड़ रही थी। पूर्णिमा थी या नहीं, याद नहीं, पर चारों ओर छिटकी चाँदनी बहुत ही प्रिय

[147] टंडन, डॉ. प्रताप नारायण.(1970). हिन्दी कहानी कला. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण पृ. 383

लग रही थी। हवा कुछ तेज थी। हमने सिर को कंबल से इस तरह ढँक लिया था जैसे कन्टोप कहने हों। हमारी चाल तेज थी, दिल में जोश था और कभी–कभी हम एक दूसरे की ओर देखकर व्यर्थ मुस्कुरा पड़ते।'[148] इसी तरह के अनेकों उदाहरण अमरकान्त के कथा साहित्य में भरे पड़े हैं। अमरकान्त ने कथात्मक या वर्णनात्मक शैली का भरपूर उपयोग किया है।

2) आत्मचरितात्मक या आत्मकथात्मक शैली –

'मैं' शैली में लिखित उपन्यास एवम् कहानियाँ आत्मचरितात्मक या आत्मकथात्मक शैली में आती हैं। अमरकान्त ने जिन दो प्रमुख शैलियों को अपनाया उनमें आत्मकथात्मक शैली के अतिरिक्त रेखाचित्र शैली है। 'सूखा पत्ता', 'काले– उजले दिन', 'कटीली राह के फूल' जैसे उपन्यास अमरकान्त ने इसी शैली में लिखा 'गले की जंजीर', 'सवा रूपये', 'जिंदगी और जोंक', 'अमेरिका की यात्रा', 'लड़की की शादी', 'महान् चेहरा', 'विजेता', 'बहादुर', 'जोकर', 'स्वामी', 'धरती के लिए', 'निर्वासित', 'घुड़सवार', 'मकान', 'पहलवानी', 'लोक–परलोक', 'कबड्डी', 'सपूत', 'एक धनी व्यक्ति का बयान', 'लाखो', 'बीमारी' और 'शाम के घिरते अँधेरे में भटकता नौजवान' जैसी कहानियाँ भी बहुत ही सोहार्द शैली में लिखी गयी हैं।

इस शैली के संबंध में एक धारणा यह भी है कि, ''आत्मकथात्मक शैली में लिखित कहानी और उपन्यास विशेष प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। उसका कारण यह है कि इस शैली के अंतर्गत पाठक और नायक के मध्य बिना किसी रूकावट के सम्पर्क स्थापित हो जाता है। इस शैली में रचित कभी–कभी अविश्वसनीय घटनाएं भी आत्मीय

[148] लाल, डॉ. लक्ष्मी नारायण. (1996). हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. पृ. 234–235

सहानुभूति के कारण सह और विश्सनीय प्रतीत होने लगती है।''[149]

3) पत्रात्मक शैली –

जब उपन्यास या कहानी के कथानक को विस्तार देने के लिए पात्रों द्वारा लिखित पत्रों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है तो इसे पत्रात्मक शैली कहते हैं। कथानक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इन पत्रों से ही संबद्ध होता है। अमरकान्त ने अपने कुछ उपन्यासों में इस शैली का उपयोग किया है। 'सूखा पत्ता' और 'आकाश पक्षी' उपन्यास में यह शैली अपनायी गयी है। अमरकान्त ने 'एक निर्णायक पत्र' और 'संत तुलसीदास और सोलहवाँ साल' जैसी कहानियों में भी इसी शैली का प्रयोग करते हैं। इस तरह के पत्रों के माध्यम से पात्रों की मनोस्थिति एवम् उनके विचारों को गहराई से समझने में मदद मिलती है।

'सूखा पत्ता' उपन्यास का नायक उर्मिला के पिताजी को पत्र लिखता है।

''पूज्य चाचा जी,

मैं उच्च कर्तव्य भाव से प्रेरित होकर यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ। यदि इसमें कोई दुष्टता की बात नजर आये तो मुझे क्षमा कीजियेगा। .....यह सच है कि हम दोनों ने शादी करने का निश्चय किया है, पर यह कोई अपराध नहीं है। नहीं। एक तो यह होता कि हम बुरी नीयत से मिलते और अपने खानदान के नाम को कलंकित करते अथवा दूसरी बात यह होती कि हम सच्चाई से एक–दूसरे को प्यार करके शादी कर लेते। हमने दूसरा रास्ता अपनाया है।''[150]

---

[149] अमरकान्त एक मूल्यांकन, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण पृष्ठ–145-146

[150] अमरकान्त : सूखा पत्ता : राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984

इसी तरह के कई अन्य पत्रात्मक शैली का उदाहरण अमरकान्त के कथा साहित्य में मिलते हैं।

4) दृश्य शैली –

''इस शैली में छोटे–छोटे दृश्यों के माध्यम से वातावरण के साथ–साथ पात्रों की रूपाकृति एवम् कार्यो का सजीव चित्र खींचा जाता है। जिस प्रकार चित्रकार विराट दृश्य कोरी रेखाओं एवम् रंगों के माध्यम से चित्र में प्रस्तुत करता है, उसी प्रकार उपन्यासकार शब्द–चित्रों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से संक्षेप में दृश्य–चित्रों को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इस शैली में पात्रों के महत्वपूर्ण कार्यो, निर्णयों एवम् उनके छोटे–छोटे जीवन खण्डों और घटनाओं की दृश्य परक प्रस्तुति इस प्रकार होती है कि पाठक को लगता है, जैसे वह इस प्रसंग में स्वयं ही भाग ले रहा हो''[151] अमरकान्त के उपन्यासों में कई ऐसे प्रसंग है जहाँ उन्होंने इस शैली का कुशलता पूर्वक उपयोग किया है। बिदा की रात' उपन्यास में सुल्ताना के व्यवहार एवम् उसके शरीर का वर्णन करते हुए अमरकान्त लिखते हैं –

''तीन बहनों और एक भाई में सबसे बड़ी सुल्ताना कुछ अलग ही थी। कभी नरमदिल और रहमदिल और कभी गुस्सैल और जिद्दी बड़ी, भूरी आँखे, कुछ छोटा गोल और गोरा चेहरा, मगर उसके पतले ओठों में ही उसकी खूबसूरती छिपी थी, जो दोनों ही हालात में उसके जज्बात और खयालात का इजहार कर देते थे। खुशी के वक्त होंठ अजीब अदा से सिकुड़ जाते और नाक में हल्की सी कँपकँपी आ जाती, और गुस्से में भवों की सिकुड़न के साथ ओठों में फड़कन। नाराजगी में वह बोलना छोड देती, अलग बैठ जाती, और बहुत हुआ तो बहस करने लगती या खाना ही छोड़ देती। ऐसे

[151] लाल, डॉ. लक्ष्मी नारायण. (1996). हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. पृ. 234–235

वक्त बोलते उसकी जबान कैंची की तरह चलती। तब तो उसकी वालिदा मेहताब बेगम भी उसका मुकाबला न कर पाती।''[152]

इसी तरह अमरकान्त की कहानी 'इंटरव्यू' का यह उद्धरण देखिये–''उम्मीदवार लोग नौ बजे से ही जिलाधीश के बंगले के सामने मंडराने लगे थे। दस बजे तक तो लगभग तीन–साढे तीन सौ व्यक्तियों की एक भारी पंचमेल भीड़, त्यौहारों के अवसर पर किसी निर्द्वन्द, धर्मात्मा सेठ के हाथ से सत्तू के लड्डू खाने के लिए एकत्रित कुत्तों के समूह के समान इकठ्ठी हो जाती थी। इसी तरह 'जनमार्गी' कहानी के बलराज का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं, ''अकेला होने पर वह सदा इसी तरह तेज चलना आरम्भ कर देता था – एक पुराने विचित्र यंत्र की तरह–जब उसका दाहिना कन्धा उचकता था, हाथ भद्दे ढंग से झूलने लगते थे और टाँगे शरीर से उखड़ने की कोशिश करती प्रतीत होती थीं। वह अभी पचास का नहीं हुआ था और उसके सिर के बाल कपास हो रहे थे। वह ठिगना और दुबला–पतला था। उसकी गरदन छोटी थी और मुँह बड़ा था छुहारे की तरह सूखा था, जिस पर घोंसले के तिनके की तरह झुर्रियाँ उभर आयी थीं।''[153]

इस तरह दृश्य शैली के अनेकों उदाहरण अमरकान्त के कथा साहित्य में मिलते हैं। अमरकान्त ने इस शैली का उपयोग बड़े ही कलात्मक तरीके से किया है।

5) कथोपकथन या संवाद शैली –

शैली के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें संवादों के आधार पर कथानक आगे

---

[152] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पहला खंड. पृ. 129

[153] अमरकांत. (2013). मित्र–मिलन. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पहला खंड. पृ. 289

बढ़ता है। छोटे–छोटे वाक्यों के माध्यम से पात्रों के बीच का संवाद कथानक को आगे बढ़ाते हैं। ये संवाद पारिवारिक समस्याओं, मनोदशाओं एवम् संवेदनाओं को व्यक्त करने में सहायक होते हैं। अमरकान्त की कहानी बउरैया कोदो' का यह संवाद देखिए–

''यह भगवान है, ढेला न मारना,'' किसी बच्चे ने कहा।

''क्या भगवान भूत होता है?'' एक काफी छोटे बच्चे ने पूछा।

''अरे बड़ा पागल है..... भूत तो भूत होता है।''

''भगवान टाफी देते है?''

''हाँ देते हैं।''

''यह गधा भी देगा?''

''गधा नहीं, भगवान जी कहो, नहीं कहोगे तो दुल्लती लगायेंगे।''

''ए जी, क्यों न फूल की एक माला पहना दें?''

''कहाँ माला है रे''

''मेरे घर में है, मैं लाता हूँ।''[154]

इसी तरह 'हंगामा' कहानी का यह संवाद देखिए –

''क्या हो रहा है?'' अलका ने पूछा।

''आइए बहिन जी, खाना खायें.....।''

''मैं खा चूकी हूँ। आप थाली में क्यों नहीं खा रही हैं?

''बहिन जी, थाली कौन जाय मलने? पेट भरने से काम है। न थाली,

---

[154] बउरैया कोदो', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ–145-146

न फाली.... हाँ।''

''सभी खाना तो कौए खा रहे है।''

''अभी ढक देती हूँ। शाम को खाना नहीं बनाएंगे, अब यही खाना हम और ये खा लेंगे.....।''

''सब खाना तो कौओं ने जूठा कर दिया है।''

''क्या हुआ? चिड़िया चुरंग तो खाते ही रहते हैं..... उनका तो यह काम है।''

''ब्लाउज क्यों उतार दिया है?''

''बहिन जी, नहा कर आई तो खाना बनाने बैठ गयी। हम लोगों में बड़ी सफाई से खाना बनता है.... बिना नहाये हम लोग नहीं बनाते....।''[155]

6) स्वप्न विश्लेषण शैली –

उपन्यासों एवम् कहानियों में कई ऐसे संदर्भ आते है जब पात्र कुछ स्वप्न देखते हैं और उसका अर्थ कहीं न कहीं मुख्य कथानक की परिस्थितियों से संबद्ध होता है। पात्रों की मनौवैज्ञानिक स्थिति को इस शैली के माध्यम से सामने लाया जाता है। उनकी मानसिक स्थिति, इच्छाएँ, कुंठाएँ सभी कुछ एक व्यक्त रूप में इस शैली के माध्यम से सामने आ जाता है।

'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी के शकलदीप बाबू अपनी पत्नी को अपने सपने के बारे में बताते हुए कहते हैं कि, ''अरे, एकदम ब्रह्म मूहूर्त में देखा था। देखता हूँ की अखबार में नतीजा निकल गया है और उसमें नारायण बाबू का भी नाम है। अब यह याद नहीं है कि कौन नम्बर था, पर इतना कह सकता हूँ कि नाम काफी ऊपर

[155] टंडन, डॉ. प्रताप नारायण. हिंदी कहानी कला. लखनऊ : हिंदी समिति सूचना विभाग 2010

था।''[156] दरअसल शकलदीप बाबू के लड़के नारायण बाबू का डिप्टी कलेक्टरी का नतीजा निकलने वाला है। पिता आशा–निराशा के बीच अजीब मनःस्थिति में हैं। उपर्युक्त स्वप्न उनकी आशा को बल प्रदान करता है।

इसी तरह 'बिदा की रात' उपन्यास की शबनम बेगम अपने शौहर से कहती है कि, ''एक रोज तो रात में मैंने सपना देखा कि कोई फरिश्ता ऊपर से आकर कहने लगा, 'ऐ दिल की पाक–साफ खातून बेगम, अपने लायक साहबजादे की फिक्र कर, नही तो पछताएगी। मै जागकर उठ गई। मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैं यह सोचकर बेचैन हो गई कि अपने साहबजादे की तकलीफ केसे दूर करूँ। इसी वक्त मेरे अंदर से कोई आवाज आई, जैसे वही फरिश्ता हो, 'ऐ पाक–साफ और, तू घबरा मत, अल्ला ने क्या मर्द और क्या औरत, सबकी परेशानियाँ दूर करने के लिए कानून बना दिए हैं, रास्ते बड़ी खूबसूरत लड़की है, खूब शऊर और सलीके वाली और जरनिवाजा बस तू चुपचाप अपने मसले हल कर ले, तेरा साहबजादा खुश रहेगा और सबको आराम और राहत मिल जाएगी.....।''[157]

यहाँ पर भी शबनम बेगम अपने लड़के की दूसरी शादी करवाना चाहती थी, इसलिए शौहर के सामने सपने और फरिश्ते की बात करती है, जिससे शौहर इसे अल्ला का आदेश मानकर आसानी से दूसरी शादी की बात पर राजी हो जाये।

7) विश्लेषणात्मक शैली –

''विश्लेषणात्मक शैली में उपन्यासकार पात्रों के चेतन या अचेतन विचारों की प्रक्रिया को अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है। इसके माध्यम से घटनाएँ, परिस्थितियाँ

---

[156] घोष, डॉ. श्यामसुंदर. (1972). भारतीय मध्यवर्ग. पटनारू बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 2005

[157] चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (1996). भाषा संवेदना और सर्जन. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन, पृ 293

तथा पात्रों के कार्यो के मूल में स्थित कारण स्पष्ट हो जाते हैं, किन्तु जहाँ इस शैली का प्रयोग मनोविज्ञान से अनुप्राणित होता है, वहाँ यह शैली मनोवैज्ञानिक हो जाती है।''[158]

'पलाश के फूल' कहानी के बाबू हृदय नारायण कहते हैं कि, ''ब्रदर, स्त्री माया है!.... उसमें शैतान का वास होता है, वही भरमाता, चक्कर खिलाता और नरक के रास्ते पर ले जाता है।..... पर, भाई जान, मैं सिर्फ एक बात जानता हूँ, उसके सामने किसी की नहीं चलती, जो कुछ होता है, उसकी के इशारे से होता है। वह चाहता है, तभी हम चोरी, डकैती, हत्या, जना, बदकारी, सब कुछ करते हैं, और जहाँ उसकी मेहर हुई, सब मिनटों में टूट जाता है।''[159]

हृदय नारायण बाबू उपर्युक्त बात अपने द्वारा किये गये घृणित कार्य को बताने के साथ–साथ उसे ईश्वरी माया या इच्छा बताकर 'जस्टीफाई' भी करना चाहते हैं। इसी तरह 'आकाश पक्षी' उपन्यास की पात्र हेमा जब यह कहती है कि, ''रो–धोकर मैं बाहर निकली। मैंने स्नान किया। फिर मैं सजने–धजने लगी। मैं आईने के सामने खड़ी हूँ। मेरे शरीर पर कटवर्क की साड़ी चमक रही है। कानों में बालियाँ डोल रही हैं। मैं आज अहाटे में शान से घूमूँगी और किसी को पहचानूँगी नहीं। मैं अब सबके प्रति अपना अहंकार तथा उपेक्षा प्रकट करूँगी, क्योंकि मैंने स्वयं अपने हाथों अपने प्यार का गला घोंट दिया और जिंदगी से बहुत दूर एक ऐसे मरूस्थल में चली आयी, जहाँ मेरी

---

[158] एंगेल्स, फरेडरिख. (2014). परिवार निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति (नदीम, नरेश– अनु.). नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान

[159] 'पलाश के फूल', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

आत्मा सदा प्यास से छटपटाती रहेगी।''[160] तो वह अपनी मनःस्थिति और व्यवहार के बीच के द्वंद्व को स्पष्ट करती है। यहाँ उसके प्रति पाठकों में करूणा का भाव जाग'त होता है।

8) सांकेतिक शैली –

अत्यधिक विस्तार और विश्लेषण की जगह जब कथाकार कतिपय संकेतों के माध्यम से घटना को चित्रित करता है, तो उसे सांकेतिक शैली कहते हैं। कई बार कथानक में पात्र अपनी प्रतिक्रिया संकेतों के आधार पर व्यक्त करते हैं। परिस्थिति विशेष में अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिक शैली बड़े ही कारगर तरीके से सामने प्रस्तुत होती है। अमरकान्त ने भी इस शैली का सीमित पर सधा हुआ प्रयोग किया हैं।

'असमर्थ हिलता हाँथ' नामक कहानी में लक्ष्मी की दशा का वर्णन करते हुए अमरकान्त लिखते हैं, ''उसने घर के लोगों को पुकारा। सभी दौड़े आये। बड़े लड़के ने दाहिना पैर और दाहिना हाथ हिलाकर देखा। वे बेजान से बिस्तर पर गिर पड़े। फिर उसने मुँह में पानी डाला। पानी मुँह से बाहर निकल कर बिस्तर पर फैल गया। ''लकवा है! मुँह टेढ़ा हो गया है। अंगों पर है.....।'' यहाँ विस्तार से वर्णन की गुंजाइश नहीं है। सिर्फ संकेतों से स्थिति को समझाने का प्रयत्न किया है।

इसी तरह 'दोपहर का भोजन' कहानी का रामचन्द्र भूख होने पर भी अधिक रोटी नहीं खाता। जानता है कि वह अपने हिस्से का खाना खा चुका है। माँ से पानी लाने के लिए कहता है। फिर ''एक–दो क्षण बाद रोटी के टुकड़े को धीरे से हाँथ से उठाकर आँख से निहारा और अंत में इधर–उधर देखने के बाद टुकड़े को मुँह मे इस

---

[160] 'पलाश के फूल', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–149

सरलता से रख लिया, जैसे वह भोजन का ग्रास न हो कर पान का बीड़ा हो।''[161] यहाँ पर भी रामचन्द्र भूख और अभाव के बीच संवाद से बचता हुआ अपने संकेतों से ही अपनी स्थिति स्पष्ट कर रहा है। अमरकान्त के यहाँ सांकेतिकता इसी रूप में सामने आयी है।

9) व्यंग्यात्मक शैली –

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का सामान्य जन–मानस जिस 'मोहभंग' की स्थिति में था वहाँ उसके 'यथार्थ' को व्यक्त करने का सबसे सशक्त हथियार 'व्यंग्य' ही था। आदर्शो और नैतिकता के नाम पर लोग किस तरह अपने स्वार्थ की रोटियाँ सें रहे थे इसे बताने के लिए 'नयी कहानी आंदोलन' के रचनाकारों ने व्यंग्यात्मक शैली का भरपूर उपयोग किया।

'व्यंग्य' अमरकान्त की एक प्रमुख शैली है। अमरकान्त के पूरे कथा साहित्य में व्यंग्य की छाप है। जहाँ कथनी–करनी में अंतर, कोरी भावुकता, स्वार्थ सिद्धी और व्यक्तिगत लाभ के लिए आदर्श और नैतिकता की दुहाई देनेवाले पात्र आये हैं, वहीं अमरकान्त ने व्यंग्य के माध्यम से उनका चरित्रांकन भी किया है। निम्नलिखित उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जायेगा।

'पलाश के फूल' कहानी के पात्र बाबू हृदयनारायण के संवादों के माध्यम से देहातों में गरीबों के शोषण की स्थिति को अमरकान्त व्यंग्यात्मक तरीके से प्रस्तुत करते है। हृदयनारायन कहता है, ''नहीं जानते? .....अरे, हमारे देहातों में यह आम रिवाज था। जब बाबू लोगों को किसी गरीब की बहू–बेटी पसंद आ जाती, तो वे उसको तंग

---

[161] 'दोपहर का भोजन', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

परेशान करते, मारते–पीटते, खेतों से बेदखल कर देते, और सफलता न मिलने पर बुरी तरह पिटवा देते। फिर रात में उसके धर में घुसकर या किसी दूसरे तरीके से उल्लू सीधा करते।''[162]

इसी तरह 'गगनबिहारी' कहानी के सुंदरलाल का चरित्रांकन भी अमरकान्त ने व्यंग्यात्मक रूप में ही किया है। उनका चरित्र उन लोगों जैसा है जो जीवन में स्थिर मन से, संयम के साथ परिश्रम करते हुए आगे नहीं बढ़ पाते। ये वो लोग हैं जो जल्द से जल्द और कम से कम श्रम में सबकुछ हासिल कर लेना चाहते हैं। ऐसे लोग कल्पना में ही अधिक खोये रहते हैं। म्यान की दो तलवारे' नामक कहनी में साथ काम करने वाले विकल' और मदमस्त' की आपसी दुश्मनी का वर्णन अमरकान्त व्यंग्यात्मक शैली में ही करते है। मदमस्त अगर लिखता कि –

''देर हो रही है, देर हो रही है,

जौनपुर की लोमडी शेर हो रही है।''

तो जवाब में विकल' की भी कविता तैयार हो जाती –

''देर हो रही है, देर हो रही है,

'मदमस्त' जैसे गीदडों की ढेर हो रही है।''[163]

'अमेरिका यात्रा', 'लड़की की शादी', 'मैत्री', 'महान चेहरा', 'कला प्रेमी', 'प्रिय मेहमान', 'हंगामा', 'बडरैया कोदो', 'लोक–परलोक', और ''वान गाथा' जैसी कहानियों

---

[162] म्यान की दो तलवारे', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

[163] अमरकान्त एक मूल्यांकन, अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013, पृष्ठ–145-146

में अमरकान्त ने इस व्यंग्यात्मक शैली का भरपूर उपयोग किया है। इन उपन्यासों में भी व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग दिखलायी पड़ता है।

10) हास्य शैली

अमरकान्त के कथा साहित्य में हास्य के जो पुट मिलते हैं वे भी व्यंग्य पूर्ण ही हैं। फिर भी संवादों में व्यक्त हास्य कथानक को गंभीरता और अतिभावुकता से बचाने में महत्वपूर्ण दिखायी पड़ते हैं। अमरकान्त का मुख्य हथियार 'व्यंग्य' ही रहा है। इस व्यंग्यात्मक शैली के साथ हास्य का स्वरूप भी सामने आया है। इस संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरण उल्लेखनीय हैं।

'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास का पात्र पिलपिली ढेला को ग्रैविटी कॉटने वाला मजाक समझाते हुए कहता है', ''अरे, तुम ग्रैविटी नहीं जानती? बड़ी फिसड्डी हो। देखो यह धरती हर चीज को अपनी तरफ खींचती है, इसीलिए हर चीज पृथ्वी पर टिकी हुई। हमारे पास एक ऐसा औजार है, जिससे हम किसी आदमी या चीज के नीचे से ग्रैविटी को खुट–खुट काट देते हैं और वह आकाश में उड़ने लगता है। .....अगर तुम्हारा कोई दुश्मन हो तो बताओ, हम उसकी ग्रैविटी काट देंगे और वह बाप–दादा चिल्लाते हुए आसमान में उड़ने लगेगा।''[164] इसी तरह जब गोवर्धन एकदम भावुक होकर ढेला से गंभीर बाते करता रहता है तो ढेला एकदम से यह कहकर हॅस पड़ती है कि, ''यह कैसे? मैं अपनी माँ की हू, इस शहर के मर्दो की हूँ, उनके पैसों की हूँ, अपने पेशे की हूँ, अपने और अपने खानदान के पेट की हूँ।''[165]

---

[164] अमरकान्त : इन्हीं हथियरों से : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008 पृष्ठ–145-146

[165] अमरकान्त : इन्हीं हथियरों से : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008 पृष्ठ–145-146

जिंदगी और जोंक' कहानी का रजुआ कई बार अपनी बातों से हास्य उपस्थित करता है। जैसे कि यह पूछने पर की उसे नहाये कितने दिन हुए तो वह कहता है कि, ''खिचड़ी की खिचड़ी नहाता हूँ। न, मलिकाइन जी।''[166] इसी तरह कुएं पर किसी औरत को देखकर पूछ बैठता ''यह कौन है? अच्छा बड़की भौजी है। सलाम भौजी। सीताराम, सीताराम, राम–राम जपना पराया माल अपना।''[167]

'हत्यारे' कहानी के संवादों में भी हास्य का पुट दिखलायी पड़ता है। निम्नलिखित संवाद उल्लेखनीय है।

''– हलो, डियर!

– हलो, सन ! – गोरा पास आकर खड़ा हो गया।

– इतना लेट क्यों, बेटे?

– भई, बोर हो नये!

– कोई खास बात?

– यही नेहरू है, यार! आज उसका एक और पत्र मिला है।

– आई सी! – सॉवले की ऑखों और होंठों के कोरों में हास्य की हल्की सिकुड़नें पैदा हो कर विलीन हो गयीं।

यहॉ स्पष्ट है कि इन दोंनों पात्रों का नेहरू जी से कुछ लेना–देना नहीं है। ये सिर्फ एक दूसरे के सामने डींगे मार रहे हैं। एक–दूसरे की सच्चाई से दोनों ही वाकिफ हैं। इसीतरह हास्य के कई अन्य उदाहरण भी अमरकान्त के कथा साहित्य में मिल जाते हैं।

---

[166] जिंदगी और जोंक', कालिया रविन्द्र, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2012 पृष्ठ–145-146

[167] जिंदगी और जोंक' कालिया रविन्द्र, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2012 पृष्ठ–145-146

11) प्रतीकात्मक शैली –

''जिन भावों को प्रकट करने में कठिनाई होती थी, उन्हें सहज एवम् प्रभावशाली ढ़ग से व्यक्त करने के लिए प्रतीकाम्मक शैली का विकास हुआ । इससे उपन्यासों में कलात्मकता की भी अभिवद्धि हुई। अमरकान्त ने इस शैली का सीमित पर सुंदर प्रयोग किया है। निम्नलिखि्त कुछ उदाहरण उल्लेखनीय है।

'बिदा की रात' उपन्यास के प्रारंभ में सुलताना की स्थिति स्पष्ट करते हुए अमरकान्त लिखते है कि, ''बीसवीं सदी की आखिरी हद पर, पचास की उम्र के पार, वह कुछ ज्यादा ही सोचने लगी है। एक समय का खूबसूरत चेहरा अब फिक्र की लकीरों के साथ सूखे–सिकुड़े हारे की शक्ल में बदल गया है। ....कई दिनों की कड़वी मिर्ची धूप के बाद हवा तेज चल रही है, आसमान में हल्के भूरे बादल मकानों के पीछे से उभर कर पश्चिम की तरफ दौड़ लगा रहे हैं।''[168] इसी तरह उपन्यास में एक जगह उसके एकाकी पन के संदर्भ में लिखते हैं कि,''...अचानक उन्हें महसूस हुआ कि उनकी जिंदगी तो इस मकान की तरह ही है, जिसमें सें हर शख्स बाहर निकलता ही जा रहा है। .....और उनके मुँह से चीख निकल गई, ''हाय अल्ला, ऐ परवर दिगार!'' [169]

12) उद्धरण शैली –

उद्धरण शैली' का उपयोग कथा साहित्य में इधर काफी कम हो गया है। फिर भी कई बार पात्रों की मनःस्थिति, उनकी इच्छाओं, प्रचलित लोक गीत, कवितां, सूक्तियों, भाषणों आदि को प्रस्तुत करने के लिए उद्धरण शैली का उपयोग होता रहता है।

---

[168] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (दूसरा खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

[169] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (दूसरा खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–241

अमरकान्त ने अपने उपन्यास 'सुन्नर पांडे की पतोह' और 'इन्ही हथियारों से' में शैली का उपयोग करते है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

– ''पाको हे ईट पाको

जइसे दू मेहरी का मरद पाके....''[170]

– ''सिर पर बांधे कफनिया हो::

शहीदों की टोली निकली.... ।''[171]

– ''थानेदार होश में आओ,

चौरी चौरा याद करो।

थानेदार नीचे उतरो,

चौरी चौरा याद करो।

हम अहिंसा के अनुयायी,

पुलिस हमारे भाई–भाई।

आजाद सरकार , जिन्दाबाद''[172]

– ''सब मिल खाएँ मकई का लावा

---

[170] 'सुन्नर पांडे की पतोह' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2005 पृष्ठ–145-146

[171] 'सुन्नर पांडे की पतोह', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

[172] वहीं, पृष्ठ–242

नाहीं मिले तो बोल दें धावा....

बोल दें धावा....

बोल दें धावा।''[173]

13) आत्म विश्लेषण युक्त भावत्मक शैली –

कथा साहित्य में पात्रों की मानसिक स्थिति के, उनके मानसिक द्वंद्व के चित्र प्रस्तुत करने के लिए इस भावात्मक शैली का उपयोग किया जाता रहा है। यह शैली पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को अभिव्यक्त करने में भी कारकर साबित होती है। अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य कई जगहों पर इस शैली का उपयोग किया है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

– ''जब वह आया तो मेरा ह्रदय जोरों से धड़का था। जैसे मुझ पर बेहोशी छा जाएगी। .....भावनाओं में खोयी हुई ऑखें जो मुझे इतनी अच्छी लगती थीं और जिनको देखने या जिनका खयाल करने से ही मैं बुरी तरह आन्दोलित हो उठती थी।''[174]

– ''उस दिन जब रवि ने मेरे हॉथ पर अपना हॉथ रखा तो मुझे और जोर से रूलाई आयी थी। मैंने अपना हॉथ वहॉ से हटाया नहीं था। फिर मैंने अपने उपर नियन्त्रण कर लिया था। दूसरे हॉथ से मैंने अपनी ऑखें पोंछ ली थीं । वह इसी तरह कुछ देर तक हॉथ रखे रहा। उसका चेहरा किन्हीं भावनाओं में खो गया था और सचमुच वह इस दुनियॉ में नहीं था।''[175]

---

[173] वहीं, पृष्ठ–325

[174] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण . पृ. 289

[175] वही. पृ. 499–500

– ''पोस्टकार्ड लौटाते समय मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा। उसके मुख पर मौत की भीषण छाया नाच रही थी और वह जिन्दगी से जोंक की तरह चिपटा था – लेकिन जोंक वह था या जिंदगी? वह जिंदगी का खून चूस रहा था या जिंदगी उसका? मैं तँय न कर पाया।''[176]

इस शैली के माध्यम से पात्रों की मनरूस्थिति तो स्पष्ट होती ही है, इससे ही कथानक आगे भी बढ़ता है।

14) चित्रात्मक शैली –

चित्रात्मक शैली के माध्यम से लेखक की सूक्ष्म चित्रण क्षमता का पता चलता है। कथासाहित्य में इस शैली के प्रयोग से विषय वस्तु में जीवंतता आ जाती है। अमरकान्त के उपन्यासों एवम् कहानियों में कई जगह इस शैली का प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

'इन्ही हथियारों से' उपन्यास के प्रांरभ में ही अमरकान्त का स्थान विशेष के संदर्भ में किया गया वर्णन इस तरह का है कि पाठक अपने मन में वैसे ही दृश्य को देख पाता है। वे लिखते है कि, ''आज हर रस्ता टाउन–हॉल की ओर जा रहा है। चाहे भगुक्षेत्र,– जापलिनगंज या बमपुलिस मोहल्ला हो, प्रत्येक गली, सड़क और चौराहे से निकलकर लोग उधर ही लपक रहे हैं। चारों ओर से सिमट आए, मिरचई धूप निकली थी।''[177]

'सप्ताहान्त' कहानी का यह वाक्य भी अपने समय के चित्र को प्रस्तुत करता

---

[176] वही. पृ. 289

[177] 'इन्ही हथियारों से', राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008 पृष्ठ–145-146

है। –''शाम तेजी से उतर रही थी और सूरज की ललौंद फीकी धूप वृक्षों और मकानों के शिखर पर दिखाई दे रही थी। वे सड़कों तथा बल खाती हुई सेंकरी, बदवूदार गलियों को पार करके एक चौड़ी सड़क पर चले आये थे जहॉ। बायीं तरफ 'राष्ट्रीय प्रेस' का बोर्ड लगा हुआ था।''[178]

'एक बाढ़ कथा' नामक कहानी का यह अंश देखिए, ''रेलवे लाइन के बाँध पर पुरूष, महिलायें और बच्चे भीड़ की ओर टुकुर–टुकुर देख रहे थे। सबके चेहरे उड़े–उड़े थे और उन पर मैल सी जम गई थी। उनकी ऑखों में भय, क्रोध, दुरूख और निराशा के मिले जुले विचित्र भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे। कोई खड़ा था और कोई बैठा था। बहुत सी औरतें सिर पर ऑचल डालकर तथा घुटनों के अन्दर मुॅह गाड़कर चुपचाप बैठी थी। बॉध के नीचे चारों ओर पानी फैला था, दर्शकों की भीड़ इधर–उधर मँडरा रही थी, पर वे हर चीज से उदासीन और निर्लिप्त थे।''[179]

15) रेखाचित्र या संस्मरणात्मक शैली –

अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य में जिन दो शैलियों का उपयोग सबसे अधिक किया है उनमें रेखाचित्र शैली प्रमुख है। पात्रों की भाव–भंगिमा एवम् उनके शारीरिक वर्णन में अमरकान्त इस शैली का उपयोग करते हैं। शब्दों के द्वारा पात्रों एवम् उनके चरित्रों को व्यक्त करने में यह शैली विशेष सहायक होती है। नई कहानी' अन्य कई कहानीकारों ने इस शैली का भरभूर उपयोंग किया है।

अमरकान्त के कथा साहित्य में इस शैली के अनेक उदाहरण है। कुछ

---

[178] 'सप्ताहान्त', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013पृष्ठ–145-146

[179] 'एक बाढ़ कथा' अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

निम्नलिखत उदाहरण विचारणीय हैं।

मूस का वर्णन करते हुए अमरकान्त लिखते है कि, ''चार फुट का मरद होने के कारण लोग उसके बारे में खामखाह कह देते, जैसा नाम वैसा गुण। दुबला–पतला शरीर, छोटा चेहरा, बड़ी बड़ी फरकती मूँछे, छोटी–छोटी मिचमिचाती आंखे और उभरी हुई गाल की हड्डियाँ। पाँच साल पहले उसने चालीस पार कर लिया था। उसके हाथों तथा पैरों में सिकुडे हुए केंचुए की तरह मोटी–मोटी नसें उभर आई थी।''[180]

इसी तरह हत्यारे' कहानी के दो युवकों का चित्रण करते हुए अमरकान्त लिखते है ''एक युवक गोरे रंग का, लम्बा, तगडा और बहुत सुंदर था, यद्यपि उसकी आँखे छोटी–छोटी थीं। वह सफेद कमीज और आधुनिक फैशन की एक ऐसी तंग पैंट पहने था, जिसको फाड़कर उसके बडे बडे और सुड़ौल पिछवाड़ा बाहर निकलना चाहते थे। पैरों में जूते थे, किन्तु मोजे नहीं थे और बाल उलटे फिरे हुए थे। दूसरा युवक साँवला, ठिगना और तन्दरूस्त था। उसकी दाढी मूंछ अपने साथी की तरह ही सफाचट थी, पोशाक भी उसी ढंग की थी, किन्तु सिर पर कश्मीरी टोपी थी, पैंट का रंग चाकलेटी न हो कर भूरा था और कमीज की दो बटनें खुली होने के कारण बनियाइन साफ दिखायी दे रही थी।'[181]

इस तरह स्पष्ट है कि अमरकान्त अपने पात्रों का शब्द रेखाचित्र बड़ी गहराई और विस्तार देकर बनाते हैं, जिससे पाठकों के मन–मस्तिष्क में उस पात्र विशेष की एक छवि निर्मित हो जाती है।

---

[180] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, पहला खंड. पृ. 129

[181] इसी तरह हत्यारे', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

16) चेतना प्रवाह शैली –

''चेतना प्रवाह–शैली में पात्रों के मस्तिष्क में प्रेत्यक क्षण उठने वाले विचारों का यथावत अंकन किया जाता है। एक ही समय में व्यक्ति मानसिक रूप से परेशान हीकर अपने प्रेम, घृणा, निराशा, सत्य, सफलता, असफलता, परिवार, समाज, देश आदि अनेक बातों के विषय में सोच जाता है। शैली का प्रयोग करने वाले कहानीकारों ने वास्तविकता की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक समय को महत्वपूर्ण माना है क्योंकि इसका संबंध मानवीय चेतना से जुड़ा हुआ है।''[182]

यद्यपि अमरकान्त उन कथाकारों में से है जिन्हें यथार्थ का पक्षधर' माना जाता है। फिर भी सीमित रूप में उन्होंने इस चेतना प्रवाह शैली का उपयोंग किया है। पर वे वास्तविकता से दूर जाकर मनोवैज्ञानिकता से जुड़ने के लिए ऐसा नहीं करते हैं, अपितु वास्तविक जीवन की परेशानियों के बीच जीते हुए पात्रों की मनरूस्थिति को व्यक्त करने के लिए ऐसा करते हैं। निम्नलिखित उदाहरणों से यह अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

'गगन बिहारी' कहानी का पात्र सुन्दरलाल बी.ए. करने के बाद कुछ करना चाहता है। पर क्या करे? कहॉ से शुरू करे? वह यही तय नहीं कर पाता है। इसलिए उसके मन में कई बाते आती हैं। वह होमियोपैथी की डॉक्टरी करने की सोचता है, फिर अचानक उसे लगता हैं कि खेती करना ही अधिक लाभ वाला व्यवसाय है, अपने मित्र से मिलने के बाद पुनः उसका विचार बदला और वह व्यापार करने की सोचता है। और वह यह भी सोचता है कि, ''सचमुच इस औद्योगीकरण के युग में इंसान और देश की तरक्की वाणिज्य–व्यापार से ही हो सकती है। इसी रास्ते पर चलकर अमेरिका

[182] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, पहला खंड. पृ. 129 पृष्ठ–145-146

इतना संपन्न और शक्तिशाली हुआ है।''[183] अचानक उसे यह लगने लगता है कि उसकी तबीयत ठीक नहीं हैं। ''किसी को पत्र लिखता, तो शुरू में ही यह सूचित करना न भूलना कि आजकल उसकी तन्दरूस्ती ठीक नहीं। .....परंतु उसके भीतर कहीं अब भी यह दृढ़ विश्वास था कि वह एक दिन खूब तन्दरूस्त और तगड़ा हो जायेगा और कठिन परिश्रम करके अपने कुटुम्ब और देश का नाम आगे करेगा।''[184]

इसी तरह अन्तरात्मा' कहानी के विमल बाबू अपने घर में आराम करते हुए खयालों में खोये हैं। शरीर में सुस्ती और ऑखे बंद हो गयी। इसके बाद वे किसी व्यक्ति को कमरे में महसूस करते हुए एक लंबी वार्ता उससे करते हैं। अपने अतीत की न जानें कितनी ही बातें उन्हें याद आती है। अतीत की सच्चाईयों से संवाद करते हुए अचानक उनकी नींद टूट जाती है। ''वह उठकर बैठ गये। उनका शरीर पसीने से नहाया हुआ था। .....कभी–कभी सपने भी अजीब दिखाई देते हैं। उन्होंने सिर को कई बार हिलाया, वह अब पूरी तरह चैतन्य हो गये थे।''[185] दरअसल विमल बाबू के 'सब कॉन्सियस माइंड' में वे सारी बातें थी जो उन्होंने सबसे छुपाते हुए तरक्की के मार्ग पर वे अक्सर आगे बढ़ते रहे। पर चेतना जब उनको उनके ही छुपे हुए रूप से मिलवाती है तो वे असहज हो उठते हैं।

....'काले उजले दिन' उपन्यास का नायक यह अच्छी तरह जानता है कि

---

[183] 'गगन बिहारी', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–145-146

[184] 'गगन बिहारी', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–35

[185] अन्तरात्मा', अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–326

''प्यार, समर्पण एवं विश्वास ही कान्ति का जीवन था।''[186] पर वह सब कुछ समझते हुए भी वह अपने ऑफिस की रजनी से प्रेम करता है। पत्नी 'कान्ति' के लिए सहानुभूति है पर प्रेम नहीं। 'कान्ति' और रजनी' के बीच के द्वंद्व को वह मानसिक रूप से झेलता रहता है। कई तरह के विचारों से टकराता है। परिवार, समाज और न जाने क्या–क्या । इस उपन्यास में भी चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग स्पष्ट दिखायी पड़ता है।

17. समन्वित शैली –

समन्वित शैली का अभिप्राय है कि कहानी में एक से अधिक शैली का उपयोग करते हुए कथानक प्रस्तुत करना। उपन्यासों में तो यह सामान्य बात है, क्यों कि उपन्यासों में मिश्रित शैली या समन्वित शैली का ही अधिकांशतः तक प्रयोग होता है। कहानियों का कथानक उपन्यासों की तुलना में बहुत ही छोटा होता है। फिर भी कई कहानीकार अपनी कहानियों में एक से अधिक शैली का प्रयोग करते हैं। अमरकान्त की कुछ कहानियों में समन्वित शैली का प्रयोग दिखायी पड़ता है। ऐसी कहानियों में विश्लेषणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, रेखाचित्र शैली और स्वप्न विश्लेषण शैली के साथ संवाद शैली का सुंदर समन्वय दिखायी पड़ता है।

'संत तुलसीदास और सोलहवॉ साल', 'जिन्दगी और जोंक', 'डिप्टी कलक्टरी', 'गगन बिहारी', 'मूस', 'हत्यारे', 'महुआ', 'कला प्रेमी', 'हंगामा', 'बउरैया कोदो', 'चॉद' और 'सफर' जैसी कहानियों में समन्वित शैली का प्रयोग दिखायी पड़ता है।

18. समाचार पत्रों की कतरन या रिपोर्ताज शैली –

''यथार्थ के अत्यधिक आग्रह के कारण कहानी कई बार लेखक द्वारा प्रत्यक्ष

---

[186] अमरकान्त एक मूल्यांकन, अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–42

देखी गई घटना का वर्णन बन जाती है। ऐसी स्थिति में वह रिपोर्ताज विधा के काफी निकट जा पड़ती हैं। कई बार लेखक इस विधा को कहानी की एक शैली के रूप में इस प्रकार प्रयोग करते हैं कि कई बार यथार्थ घटना या स्थिति का वर्णन न होने पर भी कहानी रिपोर्ताज ही मालूम पड़ती हैं।''[187]

अमरकान्त ने अपने उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' में इस शैली का भरपूर उपयोग करते हैं। जैसा कि वे खुद कहते हैं कि यह उपन्यास ऐतिहासिक न होकर भी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का है। अतः कई आंदोलनों, नेताओं के भाषणों और घटनाओं का जिक्र अमरकान्त एकदम रिपोर्ताज विधा की शैली में करते हैं। इस संदर्भ में कुछ निम्नलिखित कुछ उदाहरण विचारणीय हैं।

उपन्यास के प्रारंभ में अमरकान्त बलिया जिले, यहां की भाषा, यहां की संस्कृति आदि के बारे में विस्तार से बतलाने के लिए 'सुरंजन शास्त्री' नामक पात्र के भाषण का सहारा लेते हैं। और विस्तार में सारी बाते कहते हैं। मानों वे स्वयं उस ऐतिहासिक भाषण को सुनने के लिए वहाँ उपस्थित रहे हों।

बलिया के कई स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों आदि के बारे में बताते हुए अमरकान्त 'कांग्रेस अध्यक्ष' के संबोधन को भी विस्तार से बतलाते हैं। यह उद्धरण देखिये. इस बहादुर जिले के बहादुर साथियों, सबसे पहले मैं आजादी के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। हॉ आज से आप स्वतन्त्र हैं। अंग्रेजों की गुलामी खत्म हो गई है। अगर आपने इतना बड़ा सघर्ष न चलाया होता, महान कुर्बानियाँ न दी होतीं तो ये दिन देखने को न मिलते।

उपन्यास के ये सभी प्रसंग रिपोर्ताज शैली के अधिक निकट दिखायी पड़ते हैं।

---

[187] लाल, डॉ. लक्ष्मी नारायण. (1996). हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. पृ. 234–235

इन शैलियों के अतिरिक्त कई अन्य शैलियों का जिक्र अमरकान्त के कथा साहित्य के संदर्भ में मिलता है। जैसे कि, ''क्रोधात्मक शैली, मुहावरेदार शैली, कहावतेदार शैली, शरीर सौष्ठात्मक शैली, रोमांटिक शैली, ग्राम्य एवं जन–मानस की भाषा शैली, उमपात्मक शैली, और रूआंसू शैली''[188]

इस तरह उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि यद्यपि अमरकांत शिल्प और शैली को लेकर प्रयोग के हिमायती नही हैं किंतु उनके विस्तृत कथा साहित्य में कथानक की आवश्यकतानुसार सहज रूप में कई शैलियों का प्रयोग दिखायी पड़ता है। शैलियों का यह प्रयोग सप्रयास किया हुआ नहीं लगता, जैसा की 'नई कहानी' आंदोलन के अनेकों कथाकारों ने किया। अमरकान्त शिल्प और कथ्य के स्तर पर प्रायः नवीन प्रयोगों से बचते रहै हैं। आत्मकथ्यात्मक और रेखाचित्र शैली को उन्होंने विशेष तौर पर अपनाया है। कथानक प्रायः सपाट हैं। जानवरों की उपमा वे पात्रों की भाव–भंगिमाओं एवम् शारीरिक वर्णन के लिए विशेष तौर पर करते हैं। पर इनका यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि अमरकान्त शिल्प और शैली को लेकर सहज नहीं थे। अमरकान्त के यहॉ जितनी सहजता और सरलता है उतनी ही सजगता भी।

(ख) पूर्व के कथा साहित्य से अमरकान्त के कथा साहित्य में शिल्पगत भिन्नता मध्यवर्गीय चेतना –

न केवल अमरकान्त अपितु 'नई कहानी आंदोलन, के ज्यादातर साहित्यकारों ने मध्यवर्ग को वर्णित ज्यादा किया है। इन सब प्रव'त्तियों के मूल में अधिकांशतः आर्थिक

[188] लाल, डॉ. लक्ष्मी नारायण. (1996). हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. पृ. 87

कारण और संयुक्त परिवार का विघटन ही प्रधान है।''[189]

अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय और निम्नमध्यवर्गीय समाज में व्याप्त अभाव, कुंठा, असंतोष, मोहभंग और निराशा को बड़ी ही गहराई के साथ चित्रित किया है। अर्थ का दबाव किस तरह आपसी संबंधों को प्रभावित करने लगता है, इसे अमरकान्त के कथा साहित्य के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। मूस' जैसी कहानी इसका एक जीवंत उदाहरण है। अमरकान्त के कथा साहित्य के अध्ययन के माध्यम से एक बात और सामने आती है कि अमरकान्त के निम्न मध्यवर्गीय पात्र उनके यथार्थ से प्रभावित होकर अपनी स्थिति में जिस तीव्रता एवम् खुलेपन से बदलाव कर लेते है, वैसा मध्यवर्गीय समाज से संबंधित पात्र नहीं कर पाते। इनके यहाँ आदर्श और यथार्थ के बीच की लड़ाई बड़ी उलझी हुई एवम् लंबी है। वे बदलाव को उस तीव्रता के साथ नहीं अपना पाते जिस तरह से निम्न मध्यवर्गीय समाज के पात्र। अमरकान्त के कथा साहित्य के अधिकांश मध्यवर्गीय नायक किसी सुंदर लड़की से प्रेम करना चाहते हैं, प्रेम में बड़ी से बड़ी कुर्बानी करना चाहते हैं, पर जब कुछ करने अर्थात निर्णय लेने का समय आता है तो उनकी सारी हिम्मत पस्त है। वे अपनी इस कमी को छुपाने के लिए कई संगत – असंगत तर्क खोजने लगते हैं। हालांकि 'आकाश पक्षी' उपन्यास का नायक 'रवि' और ऐसे ही कुछ पात्र अपवाद स्वरूप हैं।

अमरकान्त प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ानेवाले कथाकारों में से एक हैं। प्रेमचंद की आदर्शवादी परंपरा से आगे बढ़ते हुए उन्होंने द्वंद्वात्मक यथार्थ के स्वरूप को सामने लाया। अमरकान्त के पात्रों की यथास्थिति की निरीहता के साथ उनकी परिवेशगत परिस्थितियों के प्रति धारणा पाठकों के मन में एक साथ बनती है। यह

---

[189] अमरकान्त एक मूल्यांकन, रवीन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ–36

यथार्थ के साथ द्वंद्व का एक नया स्वरूप था जो अमरकान्त के कथा साहित्य के माध्यम से सामने आता है। अमरकान्त किसी आदर्श को केन्द्र में रखकर अपने पात्रों के जीवन में एकदम से कोई परिवर्तन लाने की चेष्टा नहीं करते। परिस्थितियों के वशीभूत उनका पात्र जो भी जीवन जीता है उसके प्रति पाठकों के मन में सहानभूति तो उसके आस–पास की परिस्थितियों एवम् सामाजिक व्यवस्था के प्रति पाठकों के मन में क्रोध का भाव सामने आता हैं। अमरकान्त के अधिकांश मध्यवर्गीय पात्र जब भी आदर्श या नैतिकता की बात करते हैं तो केवल और केवल अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए ही। हलाँकि इतने बड़े कथा साहित्य में एकाध पात्र अपवाद भी हो सकते हैं।

स्त्री पात्रों के व्यवहार में वर्ग गत अंतर स्पष्ट दिखायी पड़ता है। अमरकान्त इस संदर्भ में लिखते भी हैं कि, ''.....मध्यवर्गीय और उच्च मध्यवर्गीय स्त्रियाँ? वे परदे में रहती हैं, अंधविश्वासों के सहारे जीती हैं, अपने पुरूषों के अनेक तरह के अन्याय सहती हैं, फिर भी दूसरी स्त्रियों, खास तरह से निम्नवर्ग की स्त्रियों से अपने को उच्च समझती हैं और किसी भी नई बात को बरदाश्त नहीं पाती। दूसरों की बहू–बेटियों की आलोचना और शिकायत में ही वह अपना खाली समय बिताती हैं।''[190] लेकीन निम्नवर्ग की स्त्रियों के यहाँ इतनी व्यवहारिक जड़ता नहीं है।

समग्र रूप में हम कह सकते हैं कि अमरकान्त ने मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग के समाज को अच्छी तरह जाना–समझा और उनके सूक्ष्म से सूक्ष्म व्यवहार को समझने में वे कुशल हैं। उनके हर व्यवहार पर उनकी मनःस्थिती तक को आँकने में अमरकान्त सफल दिखायी पड़ते हैं। यही कारण रहा है कि इन दोनों वर्ग को केन्द्र में रखकर लिखा गया उनका कथासाहित्य इतना विश्वसनीय और जीवंत दिखायी पड़ता है।

---

[190] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण पृ. 129

कथ्य का नया स्वरुप –

अमरकान्त के कथा साहित्य में अगर 'कथ्य' की बात करें तो हमें पता चलता है कि सपाट कथानक के साथ उन्होंने मध्यवर्ग और निम्न–मध्यवर्ग के जीवन से जुड़ी समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया है। दरअसल ''कहानी उन घटनाओं और कार्यो से संबंध रखती है, जो पात्रों के द्वारा किए जाते हैं और जिनका प्रधान उद्देश्य–उसके विकास में योगदान देना होता। ऐसी घटनाओं और ऐसे कार्यो को कहानी का कथानक कहते हैं।'' कथानक और कथ्य के अंतर को समझ लेना जरुरी है। ''कुछ कहने की समस्या कहानी के साथ जुड़ी है। कहानी 'क्या कहती है' इसका संबंध कथ्य से और 'कैसे कहती है' का संबंध कथानक से है। कथानक के अभाव में कहानी जीवित रह सकती है किंतु कथ्य या संवेदना –शून्य कहानी की कल्पना भी कठिन है।''[191]

'नयी कहानी' के उदय के पीछे कई बातें थी । स्वतंत्रता से आम आदमी का मोहभंग, देश के विभाजन का दर्द, सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगति, जीवन में बढ़ता आर्थिक संघर्ष और राजनैतिक अवसर वादिता के बीच जीने को विवश सामान्य भारतीय एवम् उसी परिवेश में लेखन कर रहे कथाकार ने जो भी महसूस किया वही उसका 'कथ्य' बना और 'नयी कहानी' के रुप में सामने आया । यथार्थ, कुंठा, अन्तद्वंद व्यर्थताबोध, संत्रास, अकेलापन, अजनबीपन व्यक्ति चेतना सांकेतिकता और कामुकता जैसी न जाने कितनी ही बातें 'नयी कहानी' के कथ्य से जुड़ती गयी। इनसब के बीच सबसे महत्वपूर्ण था–आम आदमी का मोहभंग ।'' नयी कहानी का स्वर मुख्यत मोहभंग की स्थिति को अभिव्यक्त करने वाला है। आजादी के बाद मोहभंग की यह

[191] अमरकान्त एक मूल्यांकन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013 रवीन्द्र कालिया, पृष्ठ–25

स्थिति–जीवन के प्रायः हर क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती दिखाई देती है। राजनीतिक –सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक सभी क्षेत्रों में व्यक्ति मोहभंग का शिकार है। वस्तुतरू आजादी को लेकर अनेक आशाएँ–आकांक्षाएँ जनमानस के मन में संचित थीं। जमींदारी उन्मूलन और पंचवर्षीय योजना जैसी अनेक विकास ्योजनाओं ने उनकी इन आकांक्षाओं को और बलवती किया। लेकिन जल्दी ही तस्वीर बदलने लगी। मोहभंग होने लगा। अधिकाधिक सुविधाएँ बटोरने की होड़ में सभी क्षेत्रों में व्यापक भ्रष्टाचार के दर्शन हुए। देश के नेतागण अवसरवादी, भ्रष्ट और दल–बदलू हो गए। भ्रष्ट राजनीति और अफसरशाही ने विकास योजनाओं का लाभ साधारण जनता तक नहीं पहुँचने दिया ...जातिवाद, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रीयता, गुटबंदी, हरामखोरी, कालाबाजारी आदि अनेक सामाजिक बुराइयों ने देश में गहरी पैठ बना ली।''[192]

इन सभी परिस्थितियों के बीच अमरकान्त अपना लेखन कार्य शुरु करते हैं, अतः 'नयी कहानी' के कथ्य में स्वरुपों से उनका प्रभावित होना सहज था। फिर भी उनके कथ्य में कुछ बातें– इस 'नयी कहानी' से अलग दिखायी पड़ती हैं। जैसे कि–

- अमरकान्त महानगरीय जीवन के चित्रण को अपनी कथा का विषय नहीं बनाते हैं। क्योंकि महानगरों के परिवेश में खुद नहीं रहे। वे गाँव–देहात और कस्बों के परिवेश से अच्छी तरह परिचित थे अतः उन्होंने इन गाँव–देहातों और कस्बों का ही चित्रण उचित समझा।
- महानगरीय जीवन के चित्रण से अमरकान्त दूर रहे अतः यहाँ व्याप्त अजनबीपन एवम् एकाकीपन का भी चित्रण उनके कथा साहित्य में –नहीं मिलता। यद्यपि छोटे कस्बों के संदर्भ कई बार कुछ ऐसे पात्रों का संक्षेप में चरित्रांकन अवश्यक हुआ है।

---

[192] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण पहला खंड. पृ. 129

- अमरकान्त के यहाँ यौन समस्या, कामुकता आदि बातों का चित्रण बहुत संयमित रुप में हुआ है। जबकि 'नई कहानी' के कई कथाकारों ने बड़ी युक्तता एवम् विस्तार के साथ इन बातों का चित्रण किया है।
- अमरकान्त के कथा साहित्य में कोरी भावुकता कम नजर आती है। वे सप्रयास नाटकीय रुप से पात्रों की परिस्थितियों में बदलाव नहीं लाते बल्कि उसकी परिस्थितिगत जटिलता को अधिक बढ़ाते ही जाते हैं।
- अमरकान्त ने आर्दश और कल्पना के माध्यम से कथ्य के अंतर्गत बदलाव नहीं लाया। उनके कई मध्यवर्गीय पात्र यद्यपि आदर्शो की बात करते हैं पर वह झलावा या दिखावा मात्र ही जाता है, जो कथानक के समाप्त होने से पहले खुद ही स्पष्ट हो जाता है।

समग्र रुप से हम कह सकते हैं कि–अमरकान्त नयी कहानी आंदोलन के कथ्य से प्रभावित तो हुए पर अपने कथासाहित्य की विश्वनीयता, सहजता, सरलता और उसके भारतीय स्वरुप से उन्होंने कोई समझौता नहीं किया। ये कथ्य संबंधी बातें ही अमरकान्त को अपने समकालीनों में एक अलग और विशिष्ट पहचान देती है। अमरकान्त का यह कथ्य संबंधी दृष्टिकोण ही उनकी विशेषता भी मानी जा सकती है।

संयमित और सांकेतिक चित्रण –

अमरकान्त अपने कथा साहित्य के माध्यम से मुख्य रुप से मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग के समाज का चित्रण करते रहे हैं। 'नयी कहानी' आदोलन की कथ्य–संबंधी कई बातों से प्रभावित होते हुए भी अमरकान्त ने अपने लिए मानों एक सीमा रेखा स्वयं निर्धारित कर ली थी। यह–सीमा कथ्य गत चित्रण से संगद्ध दिखायी पड़ता है।

अमरकान्त ने कई विषयों पर चित्रण हमेशा ही बहुत संयमित होकर किया है। यद्यपि उनके समकालीनों में कई कथाकार उनकी इस सीमा के कारण ही उन्हें भिन्न भी मानते रहे हैं। प्रेम प्रसंग एवम् कामुकता से–भरी स्थितियों का अनावश्यक विस्तार पूर्ण चित्रण करने से अमरकान्त हमेशा संकोच करते रहे। कामुकता की भावना– भरी हुई है। कई कहानियों में भी ऐसी स्थितियाँ सामने आयी हैं। पर अमरकान्त अपना संयम कहीं नहीं खोते।

अमरकान्त ने वासना या कामुकता संबंधी जो वर्णन किये भी है उसके पीछे दो स्थितियाँ नजर आती हैं। एक तो यह कि इस तरह के चित्रण से वे पात्र विशेष की मनरू स्थिति को स्पष्ट कर सकें और दूसरी बात यह कि इस तरह के चित्रण से मानों बतलाना चाहते थे कि पूँजीवादी व्यवस्था के बीच जीता हुए आदमी कितना– आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी होता जाता है। ''हमारी पूँजीवादी व्यवस्था की गिरपत्त में आदमी किस कदर टुच्चा, स्वार्था और आत्म केन्द्रित होता है यह तध्य अमरकान्त की कई कहानियों में उभर कर सामने आता है। यह व्यवस्था आदमी के अंदर आत्म–गरिमा के प्रदर्शन का ह्दम ही नहीं पैदा करती, उपदेशक–और बड़बोलेपन की भूमिका में भी ला खड़ा करती है।''[193]

संयमित चित्रण के साथ–साथ सांकेतिकता की भी विशेषता अमरकान्त के यहाँ कम ही है। जबकि नई–कहानी आंदोलन के कथ्य में 'सांकेतिकता' एक–प्रमुख स्वर था। जबकि अमरकान्त की कुछ कहानियों में ही सांकेतिकता दिखायी पड़ती है। 'दोपहर का भोजन' ऐसी ही एक कहानी है। इसी तरह 'असमर्थ हिलता हाथ' 'एक निर्णाय पत्र' और 'दर्पण' तथा 'जाँच और बच्चे' नायक कहानी में कई शैलियों का

[193] अमरकान्त एक मूल्यांकन, अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण पृष्ठ–326

प्रयोंग होता है अतः वहाँ वर भी सामान्यरुप में यह सांकेतिकता दिखायी पड़ती है। 'आकाशपक्षी' 'सुरंग' और 'इन्हीं हथियारों से' जैसे उपन्यासों में अमरकात ने सांकेतिकता का चित्रण किया है।

समग्र रुप से हम कह सकमे हैं कि अमरकान्त ने हमेशा खुद को एक 'स्वअनुशासन' में रखा। उनका यही अनुशासन उनके कथ्य साहित्य में भी दिखायी पड़ता है। प्रेम और कामुक स्थितियों का चित्रण उन्हें संयमित रुप से किया है तो 'नई कहानी' की बहुप्रचलित सांकेतिक शैली का भी वे बड़े ही संयमित रुप से उपयोग करते हैं।

9) प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता व सांकेतिकता –

1) प्रतीकात्मकता –

प्रताकात्मका की व्यापक चर्चा हम इसी अध्याय के अंतर्गत 'प्रतीकात्मक शैली' के रुप में कर चुके हैं। नई कहानी आंदोलन के कई कथाकारों ने इस शैली का जमकर उपयोग किया। लेकिन उनकी तुलना में अमरकान्त के कथा साहित्य में इस प्रतीकात्मक शैली का उपयोंग कम हुआ है। सपाट कथानक के साथ इस शैली के प्रयोग की गुंजाइश थी कम ही थी।

अमरकान्त के यहाँ यह शैली कहानियों के–नाम आदि में स्पष्ट होती है। 'जिंदगी और जोंक' 'गगन बिहारी' 'चाँद' और 'मूस' कुछ ऐसे ही शीर्षक हैं जो कथानक के अनुरुप बड़े ही प्रतीकात्मक स्वरुप में सामने आते हैं। 'इन्हीं हथियों से' 'सुरंग' 'सूखा पत्ता' 'आकाश पक्षी' 'सुखजीवी' और 'कँटीली राह के फूल' जैसे उपन्यासों के शीर्षक भी अपनें कथानक के संदर्भ में प्रतीकात्मक ही हैं।

पात्रों के भावों के सूक्ष्म चित्रण के लिए भी अमरकान्त कहीं–कहीं

प्रतीकात्मकता का सहारा लेते हैं। लेकिन प्रायः ऐसे अवसरों पर वे पात्रों की –भाव–भंगिमा आदि का चित्रण जानवरों के साथ करने लगते हैं। जिससे प्रतीकात्मकता का गांभीर्य खत्म हो जाता है और व्यंग्य का स्वरुप अधिक मुखर हो जाता है। यह अमरकान्त की अपनी शैलीगत विशेषता है जो उन्हें अन्य कथाकारों से अलग एक पहचान देती है।

2) बिम्बात्मकता –

कथा साहित्य के अंदर बिम्बात्मकता कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए उपयोग में लायी जाती–है। 'नयी कहानी' के कथा साहित्य में इसका भी उपयोग खूब हुआ। सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति में–बिम्बों का प्रयोग बड़ा कारगर सिद्ध हुआ। प्राचीन मान्य बिम्बों के स्थान पर नए बिम्ब को लेकर खूब प्रयोग किये गये। कविता की ही तरह–कथा साहित्य में भी।

''अमरकान्त ने सादृश्यविधान के लिए–हिलना, प्रहार करना, सिर हिलाना, हटपटाना आदि, उनकी आवाजें जैसे हँसी, चिल्लाना, बोलना, सिसकना, किलकारी, हिचकी, रोना, गरजना–तड़पना आदिय पात्रों की ही कार्य–पद्धति, व्यवहार अन्य प्रकार के बिम्ब बहुत कम है।''[194]

इस तरह स्पष्ट है कि अमरकान्त के –कथा साहित्य में पात्रों को पशुओं के रुप में दी जाने–वाली उपमाओं में ही बिम्ब का स्वरुप मुख्य रुप से सामने आता है। ये उपमाएँ पात्रों के बात, व्यवहार, भंगिमा आदि से संबंधित हैं।

3) सांकेतिकता –

---

[194] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड)–भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण. पृ. 129

सांकेतिक शैली का भी उपयोग नई कहानी के कथाकारों द्वारा खूब हुआ। लेकिन अमरकान्त के कथा साहित्य में सांकेतिकता कम ही दिखायी पड़ती है। कारण यह है कि अमरकान्त के पात्र मुख्य रुप से मध्यवर्गीय एवम् निम्नमध्यवर्गीय हैं।

मध्यवर्गीय पात्रों के यहाँ दिखावा या आडेबर अधिक है। अतः उनके यहाँ बड़बोलापन भी अधिक है। परंपरा, परिवार, समाज, मान्यता आदि के नाम पर कहने–सुनने के लिए बहुत कुछ है। ये अलग बात है कि उनका व्यक्तित्व एवम् चरित्र अनेकानेक कुंठाओं एवम् चिताओं के बीच तड़पता रहता है। निम्न मध्यवर्गीय पात्र परिस्थितियों के–अनुकूल बड़ी सहजता से अपने आप को बदल–लेते हैं। उनके यहाँ वे चोचले नहीं सुनायी नहीं पड़ते तो मध्यवर्गीय पात्रों के यहाँ होते हैं। अतः संकेतो में कुछ कहते–सुनने की गुंजाइश–अमरकान्त के यहाँ कम हो जाती है। फिर सूक्ष्म भावों, नायक–नायिका के बीच संवादों में कई जगह–अमरकान्त ने इस सांकेतिक शैली का उपयोग–किया है किंतु बहुत ही संयमित रुप में।

इस तरह हम कह सकते हैं कि–अमरकान्त के कथा साहित्य में प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता और सांकेतिकता का उपयोग–उनके समकालीन कथाकारों की तुलना में कम हुआ है। फिर भी कथानक की आवश्यकतानुसार कई स्थानों पर इन शैलियों का प्रयोग उन्होंने किया है। लेकिन इनका प्रयोग बहुत ही सीमित रुप में हुआ है।

10) व्यंग्यात्मकता –

अमरकान्त अपने कथासाहित्य के माध्यम से मुख्य रुप से मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग को चित्रित करते हैं। समाज का यह वर्ग हताश और निराश था। अपने आप को ठगा हुआ महसूस कर रहा था। समाज की तथाकाकित विकास की मुख्य धारा से वह अपने आप को जोड़ ही नहीं पा रहा था। विशेष तौर निम्नमध्यवर्ग। नए

सामाजिक–परिवर्तनों के बीच जैसे उसका और नुकसान ही हो रहा था। 'मूस' कहानी की परबतिया को जब यह मालूम पड़ता है कि शहरों में नल लग रहें हैं जिससे काँवर से पानी भरने का मूस का काम भी खत्म हो गया तो वह चारें तरफ– चिल्लाते हुए कहती,''सरकार कोठिया पर भर–बोरसी अँगार डालूँ!.....बाल–बच्चे नहीं हैं क्या उसके? अब किसी का धरम–करम नहीं बचेगा!.....डोम–चमार सभी एक ही घाट पानी पीएँगे!. ...हैजा–पिलेक से हजारों मनई मरेंगे! हे गंगा मैया! हे बाबा बलेसरनाथ! जो किसी की रोजी छीने उसकी आँखों में कच्चा बैठे ! उसके अंग–अंग में कोढ़ फूटे!.....।''[195]

समाज का निम्नमध्य वर्ग विकास की मुख्य धारा को पहचान ही नहीं पा रहा था। समाज का निम्नवर्ग तथाकथित विकास की मुख्यधारा को पहचान नहीं पा रहा था। उसे देख ही नहीं पा रहा था, अतः इससे उसके जुड़ने और लाभान्वित होने का प्रश्न ही उठता था। बाजारवादी संस्कृति तेजी से समाज के ढाँचे को बदलना चाह रही थी। इन सारी विरोधाभासी स्थितियों का संबंध व्यंग्यात्मकता और नाटकीयता से अपने आप ही जुड़ जाता है। समाज में व्याप्त कथनी और करनी के बीच के अंतर को साहित्य में व्यंग्य और नाटकीय स्वरुप में ही दिखलाया जा सकता है। अमरकान्त के कथ्य साहित्य में भी यही नाटकीयता और व्यंग्यात्मकता हमें दिखलायी पड़ती है। न केवल अमरकान्त अर्थात पूरे के पूरे 'नई कहानी आंदोलन' की हम बात करे तो पायेंगे कि समाज में व्याप्त इज दो–मुँहेपन, कथनी–करनी के अंतर और आदर्शो के नाम पर अपना उल्लूसीधा करनेवालों की स्थितियाँ का चित्रण यहाँ खूब हुआ है। लगभग सभी कथाकारों ने व्यंग्य और तारकीयता के माध्यम ऐसी ही स्थितियों को सामने लाया है।

अमरकान्त के कथासाहित्य में नाटकियता एवम् व्यंग्य स्पष्ट दिखायी पड़ता है।

---

[195] खलनानी, सुनील. (2002). भारतनामा. (अनु. अभय कुमार दुबे). नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

अमरकान्त के निम्नवर्ग के पात्रों को जीवन में अगर थोड़ी सी सफलता कभी मिलती हुई दिखायी भी पड़ती है तो अमरकान्त उसका वर्णन व्यंग्य के रुप में करते हैं। अक्सर किसी न किसी जानवर के उदाहरण से। ऐसा शायद इसालिए क्योंकि इससे उनके प्रति दया और सहानुभूति तो जगती ही है पर उनकी नियती के प्रति भी रचनाकार की सूक्ष्म दृष्टि से पाठक अवगत होता रहता है। अमरकान्त के यहाँ यह द्वंद्वात्मकता हमेशा बनी रहती है। विडंबनाओं को हास्यास्पद बनाकर अमरकान्त एक तरफ उन्हें निखारते हैं तो दूसरी तरफ उस पात्र विशेष की यातना को और अधिक मार्मिक बनाकर पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।

अमरकान्त के यहाँ व्यंग्य उपर्युक्त कारणों से ही अधिक मुखरित हुआ है। व्यंग्य के साथ–साथ हास्य का पुट भी कई स्थानों पर उभर आता है। अपने– पात्रों की भाव–भंगिमाओं के लिए वे जिस प्रकार पशुओं के आचरण की उपमा देते हैं उसमें व्यंग्य के साथ– साथ एक गहरी सोच भी होती है। मानवीयता और –पशुता के बीच का द्वंद्व वे इसीतरह सामने लाते हैं। पूँजी–वादी समाज में खोखले आदर्शी एवम् नैतिकता के –नाम पर सामान्य व्यक्ति का इस कदर शोषण होता है कि उसमें और पशुओं में अंतर बहुत कम हो जाता है। –'रजुआ' और 'मूस' जैसे पात्र पशुतुल्य जीवन ही –तो जीते हुए दिखायी पड़ते हैं। ऐसे में उनकी भाव–भंगिमाओं के लिए पशुओं का उदाहरण बड़ा तर्क संगत है, प्रतिकात्मक है और सांकेतिक थी। –व्यंग्यात्मक तो है ही। इस तरह के समन्वित प्रयोग करते हैं।

इस तरह हम समग्र रुप से कह सकते हैं कि अमरकान्त ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग बड़ी ही कुशलता के साथ किया है। वे जिस तरह के–समाज का चित्रण करते हैं वहाँ व्यंग्य ही सबसे कारगर साधम हो सकता है। अमरकान्त का –व्यंग्य, सिर्फ व्यंग्य न होकर बिम्ब भी है, प्रतीक भी है साथ ही साथ मनुष्यता एवम् पशुता के

बीच समाज में चल रहे संघर्ष की तरफ संकेत भी है।

11) मनोवैज्ञानिक विश्लेषण –

'नयी कहानी आंदोलन' का संबंध मनोविज्ञान से भी रहा। इसके भी दो प्रमुख कारण रहे। एक तो यह कि व्यवहार की सूक्ष्म विवेवना के लिए लेखकों को इसका सहारा लेना पड़ा दूसरा यह कि–पात्रों की मानासिक कुंठा, अनेकों असंगत व्यवहार आदि के स्वरुप को बताते के लिए भी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही आवश्यक था। क्योंकि मनुष्य के व्यवहार और मानसिक स्थितियों का अध्ययन मनोविज्ञान की–ही परिभाषा है।

मनोविज्ञान की उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है नयी कहानी आंदोलन में पात्रों के व्यवहार और–उनकी असंगत मानसिक स्थितियों का जो चित्रण प्रारंभ हुआ, वह सब मनोविज्ञान के ही अध्ययन का विषय है। आगे चलकर कहानी में यह मनोवैज्ञानिकता और भी हावी होती चली गयी। फैंटेसी, एब्सर्डिटी आदि बाते विस्तार के साथ साहित्य में अपनी दखल बढ़ा रहे थे। कई मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हिदी के सिद्धांत भी साहित्मिक कृतियों की समीक्षा के लिए अपनाये जाने लगे। फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धात इसका एक उदाहरण माना जा–सकता है। मनोवैज्ञानिकता से युक्त कथानकों में ''एक साधारण औसत व्यक्ति का चित्रण नहीं होता, बल्कि असाधारण व्यक्तियों को लेकर ही उनका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया जाता है। जिस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है, उसी प्रकार मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार 'फ्रायड' के सिद्धांतो से प्रभावित हैं।''

अमरकान्त भी पात्रों की असंगत मनरू स्थिति के लिए जो चित्रण सामने लाते वह मनोविज्ञान की भाषा में 'एब्सर्डिटी' कहलाती है। साथ ही अपने पात्रों की–भाव–भंगिता, विचार आदि का विवेचन अमरकान्त बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ करते

हैं। वे आर्थिक अभाव से उत्पन्न स्थितियाँ हैं। जिन पर बैठकर उन्हें बौद्धिक चिंतन नहीं करना है बल्कि झेलना है।''[196] ये सारी स्थितियाँ अमरकान्त के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को उनके समकालीनों से अलग एक नया स्वरूप प्रदान करती है।

अमरकान्त के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण काही परिणाम है कि उनके ''पात्र अपना निजी व्यक्तित्व और विशिष्टताएँ रखते हुए भी एक सम्पूर्ण वर्ग या समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'डिप्टी कलक्टरी' के शकलदीप बाबू गरीबी और तंगहाली की जिंदगी में भी अपने बेटे नारायण को 'डिप्टी कलक्टर' बनते देखना चाहते हैं पर मोह भंग और निराशा के कारण विश्वास ही नहीं कर पाते कि ऐसा हो सकता है। शकलदीप बाबू अपने पुत्र में सपने देखते रहते हैं और सफलता की कामना भगवान से करते रहते हैं।''[197]

समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि अमरकान्त ने भी अपने पात्रों का बड़ा ही सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण किया हैं। पात्रों की विसंगत स्थितियों के रूप में वह चित्रण सामने भी आया है। अपने पात्रों की सामान्य मनःस्थितियों को अमरकान्त बड़ी गहनता से प्रस्तुत करते हैं। वे मनोविज्ञान की जटिलता को पात्रों पर नहीं लादते अपितु पात्रों के साधारण व्यवहार को मनोविज्ञान की असाधारण स्थितियों में आँकने का प्रयास करते हैं।

अमरकान्त की कथा भाषा की विशेषताएँ–

भाषा रचनाकार के भावों, विचारों, मनोभाव की वाहिनी है। भाषा के माध्यम से ही एक रचनाकार अपनी भावनाओं को साकार रूप दे पाता है। अमरकान्त के

---

[196] खलनानी, सुनील. (2002). भारतनामा. (अनु. अभय कुमार दुबे). नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन 6

[197] खलनानी, सुनील. (2002). भारतनामा. (अनु. अभय कुमार दुबे). नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

कथा–साहित्य की भाषा सरल, सहज और मध्यम वर्ग की अभिरंजना को अभिव्यक्त करती है। अमरकान्त ने अपने कथा–साहित्य में साहित्यिक भाषा को अधिक महत्व दिया है सामान्यतः आपकी भाषा में मध्यम वर्ग के मनोविज्ञान का यथार्थ विश्लेषण देखने को मिलता है किन्तु आपने भावात्मक, विवरणात्मक, पत्र संवाद, मनोविश्लेषक तत्वों को अपने कथा साहित्य में यथोचित स्थान दिया है।

अमरकान्त की भाषा में समाज की विविध समस्याओं का समावेश होता है वे तार्किक, साहित्यिक और विविध भाषा शैली का प्रयोग करते हैं। उनकी कथा भाषा में समग्रता पाई जाती है। अमरकान्त ने बदलते सम–समायिक समस्याओं पर विशेष ध्यानाकर्षित किया है। आपके उपन्यासों के पात्र साधारण शहरी–ग्राम्य–कस्बे के निकट के हैं इसलिए इनकी कथाओं में आंचलिक या जनपदीय भाषा शैली का बोध होता है। अमरकान्त ने अपने उपन्यासों में परिवेश से आधारित पात्रों के अनुरूप भाषा को प्रस्तुत किया है कथा साहित्य में लखनऊ, बलिया, इलाहाबाद, गोरखपुर जैसे स्थानों का प्रयोग हुआ है। इन शहरों की बोली, संस्कृति, मान्यताएँ आदि विशेष रूप से कथा साहित्य की भाषा में परिलक्षित होती है। अमरकान्त ने बलिया और इलाहाबाद की भाषा का विशेष उल्लेख अपनी कथाओं में किया है क्योंकि वे लम्बे समय तक इस क्षेत्र में रहे हैं। अतः यहाँ की संस्कृति, भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति को भलिभांति जानते हैं।

अमरकान्त की कथा भाषा समसामयिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप है। अमरकान्त की कथा भाषा नई भंगिमाओं की पहचान करती है। आपने अपनी भाषिक शक्ति से 'सूखा पत्ता' में भावात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास के प्रथम खण्ड में कृष्ण कुमार आत्मकथात्मक शैली में अपने बचपन की घटनाओं के बारे में बताता है। कृष्ण कुमार अपने बारे में कहता है कि–''मनमोहन से मैत्री हुए

लगभग तीन माह हो चुके थे पर दिन–पर–दिन उनकी और मेरी घनिष्ठता बढ़ती गई। इससे मुझमें एक अभूतपूर्व परिवर्तन हो गया था। मेरे हृदय में अपने प्रति एक विस्मयजनक विश्वास का भाव उत्पन्न हो गया था, जिसके फलस्वरूप घूमने–फिरने और बातचीत में मैं कुछ शोख हो चला था। अनुकूल स्थिति पाकर मेरा दबा व्यक्तित्व इनके बेग से उभर रहा था।''[198]

मनमोहन के क्रिया–कलापों का कृष्ण के ऊपर काफी प्रभाव पड़ता है। वह भी उसी के जैसा हाव–भाव करने लगता है। कृष्ण कुमार अपने पुराने मित्रों को छोड़कर मनमोहन के साथ ही घूमने–फिरने लगा। कृष्ण कुमार कहता है कि मनमोहन की बातों पर मुझ पर जबरदस्त प्रभाव था वह मनमोहन की एक–एक बातों का अनुकरण करता था।

इस उपन्यास के द्वितीय खण्ड में 'तीन दोस्त' की कहानी है जो 'खूनी क्रांतिकारी पार्टी' बनाकर देश को स्वतंत्र कराने का सपना देखते हैं। खूनी शब्द से इन क्रांतिकारियों का आशय देश के लिए अपने खून की आहूति देना था। सेठों के यहाँ चोरी करना इस क्रांतिकारी दल का प्रमुख कार्य था। शादी न करने के प्रतिज्ञा करते हैं। 'तीन दोस्त' मनोहर, दीनानाथ, दीनेश्वर में क्रांतिकारी बनने और देश को अंग्रेजों से आजाद कराने का जोश उभरकर सामने आता है। वे विदेशी गुलामी और क्रांतिकारी सम्बंधी बातें करते थे। मनोहर कहता है– ''शहर के ही वह कांग्रेसी है। बैरिया के थानेदार ने उनको धोखे से गिरफ्तार करके बहुत पीटा है।''[199] दीनानाथ आगबबुला

---

[198] अमरकान्त – सूखा पत्ता, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984 पृ.47

[199] अमरकान्त – राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984सूखा पत्ता, पृ.43

होकर बोला– ''एक दिन मैं इस हरामजादे थानेदार और यहाँ के कलेक्टर को जान से मारकर फांसी के फंदे पर झूल जाऊँगा।''[200] इस प्रकार वे क्रांतिकारी भाषा का प्रयोग करते हैं।

'ग्राम सेविका' उपन्यास में अमरकान्त ने विवरणात्मक शैली को प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका दमयंती ग्राम समाज में बच्चों और महिलाओं को शिक्षित कर उनमें व्याप्त अंधविश्वास और शोषण से मुक्ति दिलाना चाहती है। वह महिलाओं और बच्चों में शिक्षा के प्रति अलख जगाकर ग्रामीण अंचल में जागृति लाना चाहती है। इस उपन्यास की विशेषता है कि दमयंती मध्यम वर्ग से सम्बंधित है और अपनी आजीविका के लिए ग्राम सेविका की नौकरी करती है किन्तु नौकरी से ही उसे जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। आम ग्रामीणों का मानना है कि पढ़ाई–लिखाई किस्मत की बात है दमयंती की बातों को वे किस्मत की बात कहकर नजर अंदाज कर देते थे। एक औरत कहती है कि– ''मेरे लड़के की तो किस्मत ही में पढ़ना नहीं लिखा है बहिन जी, ''अहिर टोला के छकौड़ी की स्त्री ने विज्ञ की तरह कहा, ''इसके बाबू दो बार इसको रामगढ़ के स्कूल में बैठा आए और दोनों बार इसने चारपाई पकड़ ली।''[201] इस प्रकार अमरकान्त ने इसमें वार्तालाप भाषा शैली का प्रयोग किया है। दमयंती और ग्रामीण अपनी–अपनी बातों को सुदृणता से कहते हैं।

अमरकान्त के उपन्यासों में भाषा शैली का प्रयोग पात्रों की पारिवेशिक स्थिति, परिवेश, वातावरण, देश–काल के अनुरूप किया गया है। क्योंकि भाषा का वास्तविक स्वरूप इन्हीं के बीच देखने को मिलता है। किसी भी स्थान, देश की एक निज भाषा

---

[200] अमरकान्त – राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984 सूखा पत्ता, पृ.24

[201] अमरकान्त – ग्राम सेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 9–10

संस्कृति होती है जिसके वशीभूत होकर व्यक्ति उस भाषा को बोलता है। 'ग्राम सेविका' उपन्यास में दमयंती ग्रामीण औरतों को पढ़ाई का महत्व समझाती है तो ये महिलायें दमयंती पर ही आक्रोशित हो जाती हैं। गाँव की निम्न दलित लोग अशिक्षित हैं उनके लिए अपने जिंदगी का परम उद्देश्य पेट भरना है बाकि चीजों से उनको कोई मतलब नहीं।

''सुमिरनी दाई के घर पढ़ाई फलती ही नहीं थी। वह पहले से ही क्रोध में मेढ़क की तरह फूली ग्राम सेविका का इंतजार कर रही थी।''[202] ग्रामीण औरतों का अजीबो गरीब विश्वास है– ''कोई कहता पढ़ाई से गरीबी आती है। कोई कहता पढ़कर भिखमंगा नहीं बनना। पासी टोला के स्त्री–मर्द तो जैसे पढ़ाई के दुश्मन हैं। चिथड़े में रहने वाले लोग। फूस की झोपड़ियाँ। पढ़ाई बड़े लोगों के चोचले हैं।''[203]

इस प्रकार के भाषा प्रयोग से अमरकान्त ने ग्रामीणों के अंधविश्वास, अविश्वसनीय, अज्ञानता को उभारने का प्रयास किया है। वे जानते हैं कि शिक्षा सामाजिक जीवन के परिवर्तन का परिचायक है किन्तु वे इस भ्रांति को वार्तालाप द्वारा उभारना चाहते हैं।

अमरकान्त ने अपनी भाषा को सहज और सरल बनाया है प्रतीक बिम्ब उनके साहित्य में विशेष रूप से उभरता है जबकि हम देखते हैं कि सामान्यतः भाषा में चमत्कार के लिए लेखक शब्द गर्जना और विशिष्ट भाषा–शैली का प्रयोग करते हैं जिससे रचनाओं को पढ़ने वाले पाठकों को रोचकता का अनुभव हो। 'सूखा पत्ता' में जब कृष्ण उर्मिला को आलिंगनबद्ध करता है तो लेखक ने उसके कहे शब्दों में प्रतीक

---

[202] अमरकान्त – ग्राम सेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 23

[203] अमरकान्त – ग्राम सेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 42

का सहारा लिया है– ''हमारी स्थिति पास–ही–पास उगे फूल के उन दो पौधों के समान थी जो वर्षों के पश्चात् वायु के तेज झोंकों से सरसराकर बार–बार एक–दूसरे से सढ़ते और विलग होते हैं।''[204]

इस प्रकार के प्रतीक बिम्ब से अमरकान्त ने अपनी भाषा को अलंकारिक व रसयुक्त बनाया है। अमरकान्त की साहित्यिक भाषा नवीन उपावान, अलंकारिता से युक्त है। भाषिक नयापन आपके उपन्यासों की प्रमुख विशेषतायें हैं। 'सूखा पत्ता' में सामाजिक परिवेश, प्राकृतिक चित्रण, असफल प्रेम का अनोखा संगम है इसी के अनुरूप आपने उपन्यास की भाषा को नवीनता प्रदान की है।

'सूखा पत्ता' में आपने नवीन उपमान को दृष्टि प्रदान की है। कृष्ण कहता है कि – ''मेरी हालत पालकी के पिछले कहारों जैसी थी। अगले कहारों के चलने पर जैसे पिछले कहार चलने लगते हैं और अगले कहारों के रूकने पर पिछले कहार भी रूक जाते हैं, उसी तरह जब–जब मनमोहन मेरा साथ रहा, मेरा व्यक्तित्व गतिमान हुआ और जब उनसे दोस्ती टूटी, वह गतिरूद्ध हो गया।''[205]

इस प्रकार से यह उपन्यास आत्मकथानात्मक शैली में वर्णित है। परिवेश पात्रों की मनोवृत्ति पर आधारित है। प्रायः परिवेश सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण से प्रेरित है।

'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में अमरकान्त ने आजादी के पहले के समय का चरित्र–चित्रण किया है। इस उपन्यास की भाषा शैली वर्णनात्मक है।

---

[204] अमरकान्त – सूखा पत्ता, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984, पृ.23

[205] अमरकान्त – सूखा पत्ता, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984, पृ.32

''युद्ध के अल्टीमेटम के बाद देश के राजनीतिक क्षितिज पर आंधी उठने के आसार नजर आने लगे। चूंकि जर्मनी और उसके साथी धुरी राष्ट्रों के विरूद्ध जारी युद्ध घोषणा से ब्रिटिश सरकार ने राष्ट्रमंडल के देशों के साथ हिन्दुस्तान को भी अपने पक्ष में शामिल कर लिया था, इसलिए इसके विरोध में विभिन्न प्रांतों में बने कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने इस्तीफे दे दिए। देश की जनता के वास्तविक प्रतिनिधि वे हैं, उनसे विचार–विमर्श किए बगैर मनमाने ढंग से यह ऐलान क्यों किया गया? प्रथम युद्ध में भी भारत की जनता ने साथ दिया था, अपनी कुर्बानियाँ दी थीं, लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद सभी वायदे भुला दिए गए और पुरस्कार में मिला जलियावाला बाग तथा अन्य दमनकारी कार्यवाईयाँ।''[206]

अमरकान्त के उपन्यासों में आत्मकथानात्मक शैली बार–बार उभरती है। 'आकाश पक्षी' उपन्यास में नायिका अपने माता–पिता के सामंतवादी, रियासत के दिनों को याद करती है। गुलामी के समय में सामंतों ने भारतीय जनता का जमकर शोषण किया था जिसकी यादें अभी भी जागीरदारों के मन में अवशेष है। हेमा इस उपन्यास की प्रतिनिधित्व नायिका है जो पूर्व पीढ़ी के शोषण को खत्म करना चाहती है। इस उपन्यास में चित्रात्मकता, विवरणात्मकता के साथ पत्र संवाद शैली का प्रयोग किया गया है। उपन्यास की भाषा सरल, प्रवाहमय और रोचक है। हेमा को अपने परिवार का अहं, संस्कार, उच्चता का दिखावापन हमेशा कचोटता रहता है वह मनोविश्लेषणवादी तर्क करती है–

''मैं अब कह सकती हूँ कि उच्चता की ऐसी भावना जिसमें खोखलापन हो, अत्याधिक घृणित वस्तु है। यह भावना अहंकार को जन्म देती है। ऐसा व्यक्ति सबको

---

[206] अमरकान्त – इन्हीं हथियारों से, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008 पृ.3

नीचा समझता है। वह सामान्य घटना एवं व्यवहार को अजीब घृणा से देखता है और किसी भी मानवीय भावना के अस्तित्व को नकारता है।''[207]

अमरकान्त के उपन्यासों में साहित्यिक–सामाजिक समस्याओं की तस्वीर उभरकर सामने आती है। आपने सामाजिक समस्याओं के अनुरूप उद्‌देश्य पूर्ण समसमायिक भाषा का उपयोग भी किया है। 'आकाश पक्षी' के पात्रों की सामंतवादी विचारधारा टूटने का नाम ही नहीं ले रही है। सामंती पतन के बावजूद उनका अहं बना हुआ है और वे अभी–भी अपने आपको जमींदार से कम नहीं मानते हैं। उनमें सामंती अहंवादी विचारधारा कूट–कूट कर भरी है।

रानी साहिबा अपने नौकर वनमाली से कहती हैं–

''तुम हो एक नम्बर के नमकहराम। बेवकूफ कहीं के। मैनें बार–बार कह दिया था, उनको बता देना कि राजा साहब के मिल जाने की खुशी में ये सामान भेजे जा रहे हैं। जा, फिर ले जा उनके पास। उनसे सब कुछ बता देना और साथ ही कह देना कि टोकरी लोटाएँगी तो रानी साहब बहुत बुरा मानेंगी।''[208]

इस प्रकार आपने सामंती के टूटते मन के अहंकार को उभारने का प्रयास किया है। बात–बात पर नाराज होना, गाली देना, लोगों को छोटा समझना इनका प्रमुख कार्य है। इनकी हालत दयनीय है और भूखमरी की नौबत है फिर भी इनका मनोभाव टूट नहीं रहा है।

---

[207] अमरकान्त – आकाश पक्षी, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 91

[208] अमरकान्त – आकाश पक्षी, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 91

(ग) शिल्प विधान के स्वरूप का अध्ययन–

हम देखते हैं कि कथा–साहित्य में जितना महत्व भाषा, कथानक और परिवेश का होता है उतना ही महत्व शिल्प विधान का होता है। शिल्प+विधान का आशय साहित्य में रचना या निर्माण का ढंग, रीति या पद्धति से होता है। अर्थात् शिल्प–विधान साहित्यिक रचनाओं के निर्माण के ढंग से है। प्रत्येक रचनाकार अपने–अपने ढंग से अपने अनुभव से उपन्यास साहित्य को सजाता–संवारता है। लेखक अपनी अनुभूति के माध्यम से कथा–साहित्य को अभिव्यक्त करता है।

लेखक अपनी अनुभूति और वैचारिकता से साहित्य में सदैव नवीनता लाने का प्रयास करता है। सृजनशीलता और नवीनता के कारण ही पाठक रचनाओं को पढ़ने के लिए उत्साहित होता है। कथा में नवीनता के साथ–साथ मौलिकता का होना भी आवश्यक है, मौलिकता के कारण ही कथा में रोचकता आती है। शिल्प विधान में लेखक उपन्यास के सभी बिंदुओं पर ध्यान देता है। उसके लिए भाव व कला पक्ष दोनों महत्वपूर्ण होते हैं। लेखक अपनी अनुभूति से समाज की समस्याओं को चित्रात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

हम देखते हैं कि जब रचनाकार अपने साहित्य की रचना करता है तो सबसे पहले वह कथा–वस्तु का निर्माण करता है। इसके पश्चात् वह अपनी मनोगत भावनाओं को आधार देने के लिए कुछ चरित्रों का निर्माण करता है। इसके पश्चात् वह परिवेश का चयन करके उसे यथाभाव स्थान में प्रस्तुत करता है। पात्र की रचना और परिवेश के बीच यथासंभव संयोजन करने का प्रयास किया जाता है। पात्र और परिवेश सामाजिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण तत्व है। इसका चयन ही शिल्प विधान का निर्माण है। इस प्रकार शिल्प–विधान में कथानक, चरित्र परिवेश और उसके स्वरूप का समावेश होता है। उपन्यास ऐसा साहित्य रूप है जिसके माध्यम से मनुष्य अभिव्यक्ति

के नए रूपों और भाषा की नई भंगिमाओं के सहारे नए अनुभवों की पहचान करता है। मानवीय सम्बंधों तथा भावनाओं की दुनिया में सामाजिक परिवर्तनों की पुनःरचना करते हुए उन पर विजय पाना चाहता है।

साहित्य की विभिन्न विधाएं होती हैं और उनका अलग–अलग रूप होता है। उपन्यास में कथानक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कथानक अपने जीवन की समग्रता का अंकन करता है वह एक विस्तृत पृष्ठभूमि को बाँधने का प्रयत्न करता है। कथानक में घटनाओं का संयोजन इस प्रकार होता है कि उसमें रिक्तता का अभाव पाया जाता है। कथा प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है। कथानक की सहजता, रोचकता, स्वाभाविक एवं यथार्थकता आवश्यक है। उपन्यास में कथानक सामाजिक परिवेश से आबद्ध होता है एवं आर्थिक असमनताऐं, सामाजिक भेदभाव, शोषण, वैषम्य, रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ आदि प्रस्तुत होती है। अमरकान्त के उपन्यासों की रचना मध्यम वर्ग को लेकर दृष्टिगत हुई है। स्वतंत्रता से पूर्व और बाद के उपन्यास समसमायिक समस्याओं को लेकर निर्मित किये गये हैं। 'आकाश–पक्षी' में सामंतवाद का मनोविकार झलकता है। जो समय के साथ धीरे–धीरे टूटता नजर आता है। ''बड़े सरकार भी, जो सदी अपनी रियासत तथा उच्चता की बातें किया करते थे, यह अच्छी तरह समझ गए थे कि अब पहले का जमाना नहीं रहा और अब नये तरीके से चलने में ही भलाई है।''[209]

'आकाश पक्षी' उपन्यास बदलते परिवेश को समझने का प्रयास है। सामंतवाद के पतन के बावजूद उनका अहं जागा हुआ है जो खुद में बदलाव ही करना नहीं चाहते हैं किन्तु बदलते परिवेश में उन्हें बदलना ही पड़ता है।

---

[209] अमरकान्त – आकाश पक्षी, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 91

इसी प्रकार 'इन्हीं हथियारों से' आजादी की लड़ाई का ताना–बाना बुना गया है। इस उपन्यास की रचना ठीक आजादी से पहले की है जो क्रांतिकारियों के विचारों, संघर्ष, त्याग, बलिदान का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है। दिन व समय स्थान के साथ उपन्यास का प्रारम्भ होता है। ''द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया है इसलिए स्कूल के अध्यापकों और छात्रों की ओर से अपने सम्राट के प्रति समर्थन, एक जुटता और राजभक्ति प्रकट करने के लिए एक सभा होगी और उस सम्बंध में एक प्रस्ताव भी पारित करके वाइसराय के पास भेजा जायेगा। खुशनुमा मौसम था उस दिन 9 सितम्बर 1939 ई. के उस दिन।''[210]

इस प्रकार कथा के प्रारम्भ से ही स्पष्ट होता है कि उपन्यास में क्रांतिकारी घटनायें आजादी से कुछ समय पहले की है।

पात्र एवं चरित्र–विधान में पात्रों का संचालन एवं विकास होता है। कथा में घटना की प्रधानता, संवाद कौशल, शिल्पगत वैशिष्ट्य चरित्र अनिवार्य तत्व है। मुख्य पात्र और गौण पात्र, स्त्री पात्र, नायक, नायिका आदि को इसके अन्तर्गत रखा जाता है। अमरकान्त के उपन्यासों में सभी वर्गों के लोगों की व्यथा को प्रस्तुत किया गया है। उच्च वर्ग की मिथ्या दम्भ, मध्यम वर्ग का अहं और निम्न वर्ग की लाचारी आपके उपन्यासों में झलकती है।

'सूखा पत्ता' उपन्यास के पात्र आत्म केन्द्रित है। वे बचपन से ही दिखावटीपन और विसंगतियों से घिरे हुये हैं। युवावस्था में कृष्ण कुमार के असफल प्रेम का चित्रण

---

[210] अमरकान्त – इन्हीं हथियारों से, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984 पृ.37

है। कोई भी पात्र आदर्श की सीमा को छू नहीं पाता है यद्पि वे एक दूसरे से प्रभावित है।

'ग्राम सेविका' में स्त्री पात्र दमयंती का चरित्र अंकन किया गया है। समसामायिक दृष्टि जब स्त्री घर से बाहर निकलकर कार्य करती है तो उन्हें अनेक प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता है। दमयंती प्रेम में असफल होकर दुखी है। पिता को फोलिस का असर है भाई छोटा है। लेखक लिखते हैं कि – ''वस्तुतः वह सुख और दुख के परे थी। उसके दिल में एक आग जल रही थी। वह साहस, संघर्ष और कर्मठता का जीवन अपनाकर अपने दुख, निराशा और अपमान का बदला चुकाएगी।''[211] लेखक उपन्यास में नारी संघर्ष की ओर इशारा पहले ही कर देते हैं।

जिससे कथा में उसके संघर्ष का अनुभव पहले से ही होने लगता है। वार्तालाप, संवाद या कथोपकथन उपन्यास को परिपक्वता के शिखर तक पहुँचाते हैं। लेखक की पकड़ और वैचारिक बुद्धिमता इसी बात से प्रकट होती है और लेखन की उपलब्धि भी संवाद से ही ज्ञात होती हैं संवाद और चरित्र का अन्योन्याश्रित सम्बंध होता है। संवाद मानव मन की मनोग्रंथि को खोलने में सफलता प्राप्त करती है। इसीलिए लेखक संवाद के माध्यम से ही अपनी बात कहने का साहस कर पाता है। 'कटीली राह के फूल' में युवा वर्ग के त्रिकोणीय प्रेम का मनोवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अनूप गाँव से शहर आता है और शहर की दो लड़की कामिनी और मधु को प्रेम करने लगता है। इस उपन्यास में आत्मवादी संवाद के दर्शन होते हैं– अनूप सोचता है कि– ''ऐसा शायद मैनें अपने अहंकार की तुष्टि के लिए किया। कामिनी ने मेरी जो उपेक्षा की थी, उसके बदले में मैं एक अस्पष्ट प्रतिहिंसा के वशीभूत होकर, एक दूसरी लड़की का जीवन

[211] अमरकान्त – ग्राम सेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 21

बर्बाद करना चाहता था। मैं उसको दुखित और पीड़ित करना चाहता था। इसीलिए मैं मधु के साथ इतना घूमा, उसकी आँखे डालकर उसकी बातें सुनी, अपनी बनावटी सज्जनता द्वारा उसको उत्तेजित किया।''[212]

लेखक ने इस आत्मवादी संवाद से युवाओं के अवसाद, घृणा, मनोविज्ञान को समझने का प्रयास किया है।

'बीच की दीवार' में युवाओं के बनते बिगड़ते प्रेम का साधारण प्रदर्शन है। इसलिए संवाद आम व्यवहार की तरह परिलक्षित होते हैं– ''मनफूल कहता है– दीप्ति, तुमसे एक बात पूछूँ? सहसा उसने पूछा। ''पूछिए न।'' दीप्ति ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। ''अशोक के बारे में तुम्हारी क्या राय है? ''अशोक भाई साहब बड़े घमण्डी और स्वार्थी हैं....।''[213]

इस प्रकार साधारण भाषागत व्यवहार से वे आमजन की बातों को कहने का साहस करते हैं।

1. लोकोक्ति, मुहावरा–

पढ़ाई जाए चुल्हा – ग्राम सेविका, पृ. 21

आदमी अपनी तकदीर आप बनाता है – ग्राम सेविका, पृ. 21

ढिंढोरा पिटना, नाक कटवाना, पेट बित्ता भर धुरी होना, गऊ होना

पुराना गौंदमदास होना, भैड़ा बनाकर रखना

---

[212] अमरकान्त – 'कटीली राह के फूल' राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2009 पृ. 21

[213] अमरकान्त – 'बीच की दीवार' राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008 पृ. 21

2. तद्भव– मिसिराइन, अन्वेषण, एकादशी, श्रद्धा, दृष्टिगत, अवलम्बन, कलुषित

3. अंग्रेजी शब्द – जोकर, डिप्टी कलेक्टर, कम्युनिस्ट, टाइफाइट, मारकेट, पुलिस, फाइनल ईयर, पोजिशन, मिटिंग, ट्रे, सेकेण्ड, डाक्टर, टाउन, सोसाइटी

4. अरबी, उर्दू, फारसी शब्द– गनीमत, हिकमत, एहसानमंद, इत्मीनान, वजह, बस्ती, अब्बल, इस्तेमाल, फैंसला, मकाम, कम्बख्त, तमन्ना, खिदमत, तहजीब, खानदान, पायजामा, मुबारक, फरमान, लिफाफा, आबादी, फरमान

5. नवीन शब्द– मिसिराईन, तिनककर, लमघोड़ी

6. अपशब्द (भदेश)– हरामी, बज्जर, लपाटी

7. आंचलिक शब्द– मोटइनी, ओठगाना, कंजास, धरान, टंगारी, झिपली, जुगाई, भुरकुस, बसखटा, लट्ठ, लफंगई, जांगर

(घ) भाषा और शिल्प में निहित सामाजिक चेतना–

भाषा सौंदर्य और शिल्प के माध्यम से अमरकान्त ने अपने उपन्यासों में सामाजिक चेतना के नवीन आयाम प्रस्तुत किये हैं। भाषा प्रकृति का अनुपम उपहार है। इसके माध्यम से ही हम अपनी भावना को अभिव्यक्त करते हैं। प्रत्येक साहित्यकार की अपनी भाषिक संरचना होती है जिसके माध्यम से वह अपनी बात को कहता है। भाषा में नवीनता साहित्यकार को पहचान दिलाती है जिसमें मौलिकता अनिवार्य तत्व है। रचनाकार भाषा में नवीन प्रयोगों को प्राथमिकता देकर अपनी बात को स्पष्ट करता है। भाषा अपनी अनुभूति का नवरूप होता है जिसे अपनी लेखनी में लेखक ढालता है।

हम देखते हैं कि भारतीय उपन्यास के स्वरूप की निजता उसके रूप की विशिष्टता में है यह कोई बहस की बात नहीं है कि अन्तर्वस्तु के रूप का यथार्थ चेतना के शिल्प चेतना का और जिन्दगी की वास्तविकता से उसकी भाषा का गहरा रिश्ता

होता है। उपन्यास की कला दृष्टि बहुत कुछ लेखन की यथार्थ चेतना से जुड़ी होती है।

इसी कारण साहित्यकार की पहचान भाषा और शिल्प में निहित होती है। रचनाकार अपने नित्य नये अनुभव को भाषा के प्रयोग से गठित करता है। अनुभव के साथ भाषा और शिल्प का विस्तार व विकास संभव हो पाता है। लेखक के अपने निजी अनुभव हो सकते हैं किन्तु भाषा और शिल्प के गठन में सामाजिकता का होना अनिवार्य है। सामाजिक यथार्थ ही भाषा की पहचान बनती है। अतः भाषा और शिल्प सामाजिकता के पूरक होते हैं।

अमरकान्त के उपन्यासों में वास्तविक जीवन का यथार्थ झलकता है। वे सामाजिकता का सर्वोपरि मानते हैं। 'सूखा पत्ता' उपन्यास की भाषा और शिल्प युवा मन के काफी करीब है। इस उपन्यास में युवाओं का मनोविज्ञान उभरता है। इस उपन्यास के तीसरे खण्ड 'उर्मिला' में कृष्ण कुमार का प्रेम परवान चढ़ता है किन्तु बाद में सामाजिक परिस्थितियों के कारण उसका मनोबल टूटता है। अमरकान्त ने पात्रों की स्थिति, परिवेश और वातावरण के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। हम देखते हैं कि–

''भाषा का निर्माण देश, काल, समाज, संस्कृति के बीच होता है।''[214] स्पष्ट है कि अमरकान्त के उपन्यासों में भाषा और शिल्प यथोचित स्थान पर ही समय के अनुरूप चित्रित है। कृष्ण कुमार में पढ़ाई के दौरान क्रांतिकारी विचार उत्पन्न होते हैं वो सोचता है–

---

[214] अमरकान्त – सूखा पत्ता, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984 पृ. 47

''मैं अब अच्छी तरह समझ गया कि दुनिया में शोषण एवं अन्याय क्यों है, युद्ध क्यों होते हैं, एक देश दूसरे देश को क्यों दबाता है, सभी जुल्मों और विषमताओं को समाप्त करने के लिए मामूली लोगों के संगठन एवं एकता की आवश्यकता है और उन्नत जीवन के लिए इंसान द्वारा किया जाने वाला संघर्ष अत्याधिक महान है।''[215]

अमरकान्त की उपन्यासिक भाषा और शिल्प नवीन सामाजिक पात्रों की खोज करती है। समाज में उत्प्रेरक का काम करती है। उपमान प्रस्तुत कर देना उनका उद्देश्य नहीं है अपितु उनका उद्देश्य अपनी भाषा और शिल्प संरचना से सामाजिक चेतना को जागृत करना है। आपने इन्हीं हथियारों से सामाजिक चेतना और युगीन सामाजिक परिवर्तन के बोध को प्रस्तुत किया है। मार्क्सवादी और समाजवादी पार्टी को आपने सामाजिक परिवर्तन का द्योतक माना है। मजदूर और किसानों के लिए आपने समाजवादी और साम्यवादी को प्रतिनिधि पार्टी माना है। जयप्रकाश नारायण समाजवादी के बड़े नेता थे और वे बलिया जिले के थे। अर्थात् उनके जैसा बनने की चेष्टा प्रत्येक नौजवान करता था। खादी, पैजामा, कुर्ता, कंधे से लटका झोला नौजवानों के लिए प्रेरणात्मक स्रोत थे और वे अपने आपको क्रांतिकारी व युग प्रवर्तक मानते थे।

अमरकान्त ने तत्कालिक परिस्थितियों को अपने साहित्य की भाषिक व शिल्प संरचना का आधार बनाया है। आजादी से पूर्व क्रांतिकारियों पर शरतचंद्र, यशपाल, इलाचंद्र, अज्ञेय के साहित्य को पढ़ने का शौक था। इसी समय 'अछूत कन्या', 'देवदास' बोलती फिल्म आईं। इन फिल्मों का नौजवानों पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा–

---

[215] अमरकान्त – सूखा पत्ता, राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984 पृ. 25

''क्रांतिकारी होकर किसी लड़की से प्यार करने की प्रत्येक मध्यमवर्गीय नौजवान की तमन्ना थी और देवदास की कहानी तथा उस पर बनी फिल्म ने नौजवानों में एक रहस्यमयी भावुकता भर दी थी, जिसमें बहकर वह किसी वेश्या को प्यार करने, उसका उद्धार करने का स्वप्न देखता था। समाज हिल रहा था उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया तेजी से आरंभ हो चुकी थी। अब व्यक्ति सिर्फ सामन्तवादी समाज का कोई जड़ हिस्सा नहीं था, उसका अहम निजीपन जाग रहा था। उसे अब महसूस हो रहा था कि उसकी निजी एवं सामाजिक आकांक्षाऐं हैं, जिसकी सार्थकता के लिए वह कुछ करना चाहता था अपना मौलिक योगदान।''[216]

दयानंद ने जब से 'देवदास' पढ़ी उसके मन में वेश्याओं के लिए सहानुभूति जाग उठी। दयाशंकर का सपना था कि वह वेश्या पुत्रियों को अपनी क्रांतिकारी पार्टी में शामिल करें और अंग्रेजों के खिलाफ लड़े। इस प्रकार हम देखते हैं कि अमरकान्त ने समसामयिक परिवेश को अपने कथा–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया और ऐसे पात्रों की रचना की जो सामाजिक उत्थान के प्रति सजग है। इस प्रकार आपकी भाषा में सामाजिक चेतना के प्रति सर्जनात्मकता परिलक्षित होती है। गोवर्धन को ढेला नामक वेश्या से प्रेम हो गया तो वह मिट्टी का ढेला बनाकर अलमारी में रखने लगा।

'ग्राम सेविका' उपन्यास स्त्री–समाज के परिवर्तन का द्योतक है। दमयंती का संघर्ष व्यर्थ नहीं गया बल्कि उसने अंधविश्वास, कुप्रथाओं, अनास्था को तोड़ते हुए वैज्ञानिक ढंग से सामाजिक चेतना को जागृत किया है। शिक्षा को प्रेरित करती दमयंती गाँव वालों के तानों से टूटने लगती है तब जंगी अहीर और उसका परिवार दमयंती के संघर्ष में साथ खड़े होते हैं, तत्पश्चात् अन्य ग्रामीण भी दमयंती का साथ देते हैं।

---

[216] अमरकान्त – सुन्नर पांडे की पतोह, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2005

सामाजिक चेतना का आशय यही है कि परिवर्तन गतिशील हो और समाज में सभी इसे स्वीकार करें। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से लोगों के मन में स्वच्छता, साफ–सफाई का विकास होता है और अंधविश्वास भागता है। अमरकान्त ने ग्राम सेविका के रूप में यथार्थ को आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'ग्राम सेविका' ग्राम में सामाजिक चेतना का प्रतीक है। विसुनपुर ग्राम अपने विकासात्मक प्रक्रियाओं से पिछड़ा हुआ है।

ग्राम परिवेश के कारण यहाँ भाषा में लोक संवादों का प्रयोग किया गया है। ग्रामीण समाज के लोग जातिगत, ऊँच–नीच, अंधविश्वास की भावना से ग्रसित है।

''बुढ़िया ने पूछा, कहाँ की रहने वाली हो?

फैजाबाद की! दमयंती ने कहा,

कौन जाति हो?

दमयंती के बताने पर बुढ़िया व्यंग्य से बोली, कैसी ठाकुर हो बिटिया कि इस तरह लाज–हया पीकर घूमती फिरती हो? तुमको और कोई काम नहीं?

जब बुढ़िया को दमयंती ने शिक्षा के बारे में बताया तो बुढ़िया ने कहा कि– अच्छा–अच्छा, अपना यह 'गियान' दूसरी जगह बघारना। लाख बात की एक बात, हमारा लड़का पढ़ने–बढ़ने न जाएगा।''[217]

उक्त संवाद में अमरकान्त ने लोक कहावत और भाषा का प्रयोग बाखूबी किया है। इस नकारात्मकता संवाद को ही आपने सामाजिक चेतना के रूप में परिष्कृत किया है।

अमरकान्त ने अपने उपन्यासों में स्त्री–शिक्षा से सामाजिक चेतना की लहर उत्पन्न की है। उनका वक्तव्य आज की स्त्रियों के संदर्भ में अक्षरतः सत्य उतरता है।

---

[217] अमरकान्त – ग्रामसेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 42

ग्राम सेविका में दमयंती कहती है कि– ''सदियों की गरीबी, अशिक्षा, गंदगी और बुराई के खिलाफ जंग लड़ी जा रही है। एक नई रोशनी फैल रही है जो लोगों के मन में अन्धकार के पर्दे को चिथड़े–चिथड़े कर देगी। इस लड़ाई में औरतों को भी शामिल होना चाहिए। हमारे गाँवों की औरतों की जिंदगी जानवरों की तरह है। वे यह नहीं जानती कि किस तरह गृहस्थी चलानी चाहिए। वे बच्चों को ठीक से पालन–पोषण करना नहीं जानती। वे जिंदगी भर भूत–प्रेत, टोना–टोटका, झाड़–फूंक आदि दुनिया भर के अंधविश्वासों से घिरी रहती है। जब तक स्त्री पढ़ेगी–लिखेगी नहीं वह अपने बच्चों की जिन्दगी सुधार नहीं सकती।''[218]

इस संदर्भ में संकेतात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है कि अभी यदि महिलाऐं जागृत नहीं हुई तो उनका भविष्य अंधकारमय होगा।

अमरकान्त ने संवादों में यथार्थपरक वातावरण निर्मित किया है।

''अरे कौन देता है? साले न मालूम कैसे नबाब हैं। एक–एक पाई दाँत से पकड़ते हैं। पैसे की बात करने पर पिछाड़ दिखाते हैं। हाँ, खाने–पीने का मामला हो, तो चींटे की तरह खिंचे चले आऐंगे। मैनें हजारों रूपये इस ससुरे पर बहाए लेकिन अब यह कमबख्त सीधे मुँह बात नहीं करता मैं साले को किसी दिन शूट करूँगा, तब इसको पता चलेगा।''[219]

(ड़) अमरकान्त की उपन्यास–भाषा और शिल्प का यथार्थवादी स्वरूप–

अमरकान्त के उपन्यासों की विषय–वस्तु मध्यम वर्ग के भावनाओं को मध्यम वर्ग का व्यक्ति कहता कुछ है और करना कुछ है। वह असमंजस्य की स्थिति में रहता है।

---

[218] अमरकान्त – ग्रामसेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 42

[219] अमरकान्त – ग्रामसेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008 पृ. 32

भावुक भी रहता है और कठोर, रूखापन भी उसके चेहरे से झलकता है। इसके सिद्धान्त और व्यवहार में तालमेल नहीं होता है। 'सुन्नर पाण्डेय की पतोह' में आर्य समाजी, क्रांतिकारी विचारक, स्त्री शिक्षा के प्रवर्त्तक, सादगी और सात्विक जीवन जीने वाले बेनी प्रसाद भी अपनी बेटी की शादी के फैसले लेने में डिगमगा जाते हैं। वे सर्राफा व्यवसायी तीन बच्चों के पिता से अपनी बेटी का विवाह सम्पन्न करने की सोचते हैं। अमरकान्त ने इस उपन्यास में मध्यम वर्ग की सोच, कथनी करनी में अंतर, विसंगतियों को उजागर किया है। समाज का मध्यमवर्गीय व्यक्ति घर वालों के लिए अलग विचार रखता है और समाज के प्रति अलग विचार रखता है। ''आश्चर्य था कि आर्य समाजी होते हुए भी बेनी प्रसाद ने ऐसा ही सोचा। दूसरे को उपदेश देना अलग बात है। सार्वजनिक सभा में भाषण करते समय क्रांतिकारी बातें करना बड़ा अच्छा लगता है पर बात जब अपने से सम्बन्धित होती है तो बहुत सी व्यावहारिक जरूरतों पर विचार करना ही पड़ता है।''[220]

इस प्रकार अमरकान्त ने समाज की विसंगतियों को सामने लाकर समाज के पीड़ित, शोषितों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है।

मध्यम वर्ग परिवार की सबसे बड़ी समस्या है कि वह स्वयं को आदर्शवादी समझता है और समाज के सामने अपने आपको परिवार को हितैषी बताता है। 'काले उजले दिन' का नायक अपने बचपन की पिटाई, उपेक्षा से हताश होकर हीन प्रवृत्ति का शिकार हो जाता है। माता की मृत्यु और विमाता के अत्याचार से उसके मन में कुण्ठायें भर जाती हैं वह हीनग्रंथियों से ग्रस्त हो जाता है। नायक बताता है कि– ''कभी–कभी घर से समान गायब हो जाता तो माता जी नौकर चाकर रहने पर भी मुझ

[220] अमरकान्त – सुन्नर पांडे की पतोह, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2005 पृ. 66

पर संदेह करती। जब तक माता जी कुछ नहीं करती थी, पिता जी चुप रहते थे, लेकिन जब माता जी के मुँह से कुछ मेरे खिलाफ निकल जाता था तो पिता जी गरजने–तड़पने लगते थे।''[221]

निष्कर्ष–

अंत में हम देखते हैं कि केवल शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन नहीं होता बल्कि शिक्षा के साथ सही समझ भी होनी चाहिए क्योंकि अधिकांश शिक्षाविद् सामंतों के प्रवर्त्तक ही होते हैं। उनके विरोधी नहीं होते हैं। मध्यमवर्ग की सबसे बड़ी समस्या है कि वह समाज की बुराईयों का संवहक होता है। उसमें अंधभक्ति और अंधश्रद्धा का भाव होता है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास के लिए यह भावना अवरोधक उत्पन्न करती है।

[221] अमरकान्त – काले–उजले दिन, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2003 पृ. 12